श्री गणेश वन्दना

(तर्ज : हारे का तू है सहारा सांवरे...)

किर्तन की बेला में स्वागत आपका,
बैठा हूँ बनके शरणागत आपका,
गणराज चले आओ, सब विघ्न मिटा जाओ ।। टेर ।।

ऊँचे सिंहासन पे बैठो विनायक,
जल्दी पधारो हे शुभ वर दायक,
मूसक चढ़के आओ, किरपा बरसा जाओ ।। १ ।।

फूलों के गजरों से घर को सजाया,
इत्तर की खुशबु से आंगन महकाया,
महाराज चले आओ, खुशहाल बना जाओ ।। २ ।।

दीपक जला कर दिवाली मनाई,
भोग लगाया फल मेवे मिठाई,
ये ''हर्ष'' कहे आओ, अब भोग लगा जाओ ।। ३ ।।

श्री गणेश वन्दना

(तर्ज : भगत के वश में है भगवान...)

पधारो किर्तन में गणराज-२,
कारज सारे सफल बना दो, आकर के महाराज ।।

बड़ा प्यारा मनभावन, आज दरबार लगा है,
श्याम बाबा का सोणा, आज सिणगार सजा है,
कहीं इत्तर की खुशबु, कहीं फूलों के गजरे,
देखते ही बनते हैं, श्याम सुन्दर के नखरे,
बिना आपके आज बड़े हैं, दिल के सूने साज ।। १ ।।

प्रेम से प्रथम निमन्त्रण, आपको आज भिजाया,
सबसे पहले लम्बोदर, आपको आज बुलाया,
आपके आने से ही, विघ्न हो दूर हमारे,
सफल हो जायेगें जी, हमारे कारज सारे,
बिना आपके पड़े हैं अटके, हम दीनों के काज ।। २ ।।

सांवरे के किर्तन की, हुई सारी तैयारी,
कमी है सिर्फ आपकी, करो अब किरपा भारी,
"हर्ष" की अरजी देवा, दयालु आ भी जाओ,
जरा हम बेसब्रो पर, तरस अब खा भी जाओ,
बिना आपके कौन बचाये, हम भगतों की लाज ।। ३ ।।

(तर्ज : सोलह बरस की बाली...)

दोहा : भूतेश्वर के द्वार पे झुकती आके दुनिया सारी ।
बिगड़ी हुई यहां बनती मिटती है हर लाचारी ।।

अपने भगत की तुही सुने फरियाद,
ओ भोले तेरी माला जपुं दिन रात ।। टेर ।।

गंगा के पावन तट पे बैठे हैं भूतनाथ,
चरणों को छूने वाली हर लहर को प्रणाम,
लाखों दिवाने आते दर्शन को द्वार पे,
मंदिर को जाने वाली हर डगर को प्रणाम,
धूनी लगाके बैठे, काशी के विश्वनाथ,
किस्मत संवर ही जाये, जो मिल जाये तेरा साथ ।।

भूतों के नाथ की तो महिमा अपार है,
इक तरफ डमरू धारी दूजे शमशान है,

इनकी दया से चलता सांसो का तार है,
शिव के बिना हर प्राणी शव के समान है,
जब से शरण मैं आया, दीनों के नाथ की,
मेरी कलाई थामी, बिगड़ी बनाई बात ।।

अरजी भगत की बाबा सुन लेना आज तू,
यूँही हमेशा आऊँ चौखट पे मैं तेरी,
मंदिर में बैठा बैठा आँखों को मीच कर,
यूँही मैं हर पल गाऊँ महिमा सदा तेरी,
दुनिया से मुझको बाबा, लेना है क्या भला,
तू "हर्ष" मेरे सिरपे, रखना दया का हाथ ।।

मेरे बारे में कोई राय कायम मत कीजिये ।
मेरे दिन बदलेगें आपकी राय बदल जायेंगी ।।

श्री शिव वन्दना

(तर्ज : अट्ठारह डब्बे)

बड़ा सुहाना सावन आया, मौका ये मनभावन आया,
हर-हर बम के जैकारों से, गूंजे सकल जहान रे,
कांवड़िया छम-छम नाचे, बम भोले जी के धाम में ।।

टप्पा : बम बम बोलते चलो, मस्ती घोलते चलो,
अपनी किस्मत के दरवाजे, प्यारे खोलते चलो ।।
भांत भांत का वेश बनाये, कांवड़ लेके दर पे जाये,
इक पल भी रस्ते में सारे, लेते ना आराम रे ।।

टप्पा : देखो शोर मच गया, चारों ओर मच गया,
भोले दानी का नशा, बड़ी जोर चढ़ गया ।।
भोले बाबा पार करेगा, भगतों का उद्धार करेगा,
भोले की भगती में सारे, डूबे हैं निष्काम रे ।।

टप्पा : भोले ध्यान करना, उपकार करना,
बच्चा बूढ़ा जो भी आये, उसे पार करना ।।
दर्शन की अभिलाषा लाये, बाबा तेरे द्वारे जाये,
"हर्ष" करो स्वीकार विधाता, भगतों का प्रणाम रे ।।

टप्पा : जरा झूम के तू गा, आजा ठुमका लगा,
मेरा भोला है दयालु, इसे झूम के रिझा ।।

(तर्ज : छुप गया कोई रे...)

राम जी पड़े थे तेरे, जिसपे ये पांव रे,
पूछे है रो रो तुमसे, आज वो ही नाव रे ।। टेर ।।

पार लगाती हूँ मैं, जग को किनारे से,
धारा में बहती जाऊँ, माझी के इशारे पे,
सबको ठिकाना देती, मेरा नहीं ठांव रे ।।

जल में थपेड़े खाऊँ, रात दिन राम जी,
लहरों से जूझती हूँ, ये ही मेरा काम जी,
किसको दिखाऊँ जाके, दिल के मैं घाव रे ।।

पार किये थे मैंने, लखन-राम-जानकी,
बदले में किरपा पाई, केवट ने आपकी,
करके भी यश ना पाऊँ, कैसा तेरा न्याय रे ।।

तुमसा ना दूजा कोई, राम तेरा बोलता,
लोहा भी तुझमें मिलके, पानी पे तैरता,
दुख पाके सुख देना, तेरा ये स्वभाव रे ।।

"हर्ष" हे नैया तुम तो, कितनी महान हो,
पार लगाया तुमने, खुद भगवान को,
मंजिल दिलाती सबको, तेरा ना जवाब रे ।।

(तर्ज : स्वरचित)

आयो सावण सुरंगो झूला झूलो म्हारी माँ,
झूलो म्हारी माँ झूला झूलो म्हारी माँ ।। टेर ।।

चन्दन की चौकी मंगवाई,
रेशम डोरी बांध झुलाई,
बाग बगीचो, हरियल माँ ।।

रिमझिम रिमझिम बरसे सावण,
झूला सज्या है म्हारे आंगण,
झूलण की रूत आई माँ ।।

"हर्ष" भवानी बेगा आओ,
टाबरियाँ को मान बढ़ाओ,
राह निहारां थारी माँ ।।

(तर्ज : झूमके गाओ भगतो...)

चाल रे सेवकिया, कि म्हारी दादी तने बुलाई,
दादी तने बुलाई, म्हारी दादी तने बुलाई ।।

इबकी तो भादवे में आई तेरी बारी है,
झुझणु में लाग्यो म्हारी माँ को मेलो भारी है,
देर इब क्यांकी रे, कि म्हारी दादी तने बुलाई ।।

हाजिरी लगाले जाके माँ के दरबार में,
राजी-राजी राखे दादी तेरे परिवार ने,
चाल गठजोड़े से, कि म्हारी दादी तने बुलाई ।।

झुझणुं में बैठी तने दादी जी पुकारे है,
तेरा तो नसीब जाग्या बैठ्यो के विचारे है,
करले तु त्यारी रे, कि म्हारी दादी तने बुलाई ।।

"हर्ष" शरण जो तु दादी जी की जासी रे,
दादी की दया सुं बैठ्यो मौज मनासी रे,
तेरा दिन फिरग्या रे, कि म्हारी दादी तने बुलाई ।।

(तर्ज : झूमके गाओ भगतों...)

नि भंगड़ा पाओ भगतो, ये मेला रोज-रोज नहीं आणा,
रोज-रोज नहीं आणा, मेला रोज रोज नहीं आणा ।।

शिखर गुफा से मेरी माता रानी आई है,
काली की नगरिया में आसन लगाई है,
नि शगन मनाओ भगतों, ये मेला रोज-रोज नहीं आणा ।।

एक बरस पीछे माँ का मेला आया है,
आज सारे भगतों में आनन्द छाया है,
नि तालियां बजाओ भगतों, ये मेला रोज रोज नहीं आणा ।।

आज सारे मिलके मैया को मनायेगें,
रानी माँ को मीठे-मीठे भजन सुनायेगें,
नि मंगल गाओ भगतों, ये मेला रोज-रोज नहीं आणा ।।

"हर्ष" दिवानो जरा नचके दिखाओ,
भगतों के साथ सारे ठुमका लगाओ,
नि ढ़ोल बजाओ भगतों, ये मेला रोज-रोज नहीं आणा ।।

(तर्ज : मेरे बांके बिहारी लाल...)

थारो खूब सज्यो सिणगार, भगत थाने निरखे बारम्बार,
भवानी म्हारी ढ़ाण्ढ़ण की-२ ।।

ताराजड़ी माँ थारी चुनड़ी है प्यारी,
हाथां के चुड़ले की शोभा है भारी,
थारे गल फूलां को हार ।।

मेहन्दी की आभा माँ वरणी ना जावे,
चन्दों भी थारे आगे फीको लखावे,
थारो साँचो है दरबार ।।

प्यारो सज्यो है सिणगार भवानी,
सारा भगत देखे थारे ही कानी,
थारी लेवां नजर उतार ।।

जगमग चमके माँ ज्योत सवाई,
"हर्ष" भगत वारे लूण और राई,
म्हाने लेवो जरा निहार ।।

(तर्ज : सात समन्दर पार से...)

ढ़ाण्ढ़ण वाली महर करो, अरजी पे माँ ध्यान धरो,
बेटी की माँ सुध लेले, प्यारा सा भैया दे दे ।।

किसका लाड लडाऊँ मैं, आंगन है सूना,
बहना मुझको कौन कहे, भाई के बिन माँ,
मुझको भाई दे दादी, हाथों में बांधु राखी,
बेटी की माँ सुध ले ले, प्यारा सा भैया दे दे ।।

टीडा गेला महारानी, रखले मेरी बात,
एक खिलोना दे मुझको, खेलुं जिसके साथ,
चन्दा जैसा प्यारा हो, मेरी आँख का तारा हो,
बेटी की माँ सुध ले ले, प्यारा सा भैया दे दे ।।

तुमसे ज्यादा समझे कौन, बहनों के जज्बात,
भाई के पीछे दुनिया, पूजे तुमको आज,
"हर्ष" सुनो दादी मेरी, देने में ना कर देरी,
बेटी की माँ सुध ले ले, प्यारा सा भैया दे दे ।।

(तर्ज : प्रेम का तिनका जोड़ झोपड़ी...)

भांत भांत की चुनड़ी लाये तुझे उढ़ाने को,
प्रेम से ओढ़ जरा दिखलादे दादी तेरे दिवाने को ।। टेर ।।

कोई दिल्ली से आया, कोई बोम्बे से आया,
कोई जयपुर से दादी, चुनरिया तेरी लाया,
आज तुम्हारा बेटा आया प्रेम बढ़ाने को ।। १ ।।

सजाकर भावों से माँ, दिवाने तेरे लाये,
जिधर भी देखूँ दादी, तेरी चुनड़ी लहराये,
आज तुम्हारा बालक आया तुझे सजाने को ।। २ ।।

जगत के हर कोने से, भगत तेरा माँ आया,
कोई तो लाल सुरंगी, कोई केशरिया लाया,
आज तुम्हारा सेवक आया तुझे रिझाने को ।। ३ ।।

कहे ये "हर्ष" दिवाना, ओढ़ के जरा दिखाना,
प्रेम का तोहफा लाये, हमारा मान बढ़ाना,
आज तेरे दरबार में आये धूम मचाने को ।। ४ ।।

(तर्ज : दिल में तुझे बिठाके...)

ममतामयी भवानी, ढाण्ढण की राज रानी,
चरणों में तु बिठाले, सीने से माँ लगाले ।।

मोहमाया की इस दुनिया में, स्वार्थ के सब नाते,
सच्ची ममता टीडा गेला, बच्चे तुमसे पाते,
महिमा तेरी भवानी, देवो ने है बखानी ।।

जग से ठोकर खाके मैया, तेरी शरण में आया,
मैंने सुना है शरणागत को, तूने गले लगाया,
सुनके मेरी कहानी, करूणा दिखा भवानी ।।

बेटे की आँखो में आँसु, माँ को नहीं गवारा,
"हर्ष" भगत ने रो-रो मैया, तुझको आज पुकारा,
आँखों में भरके पानी, विनती करूँ भवानी ।।

(तर्ज : शिव भोले के दरबार...)

सति दादी के दरबार, भगत सब नाच रहे,
लेकर के चुनड़िया आज, भगत सब नाच रहे ।। टेर ।।

चुनड़ी का ये उत्सव आया, "दिवानों का टोला आया"-२,
देखो खूब सजा सिणगार, भगत सब नाच रहे ।।

हाथों में चुनड़ी लहराये, "दादी की जैकार लगाये"-२,
छाई मस्ती अजब अपार, भगत सब नाच रहे ।।

अमर सुहाग की एक निशानी "आज जरा तु ओढ़ भवानी"-२,
दे भगतों को दीदार, भगत सब नाच रहे ।।

"हर्ष" कहे सब मिलके आओ "लाल चुनर दादी को उढ़ाओ"-२,
माँ कर देगी उद्धार, भगत सब नाच रहे ।।

(तर्ज : साथी हाथ बढ़ाना...)

राणी सती महामाई-राणी सती महामाई,
एक सुहागन अबला नारी, रणचण्डी बन आई ।। टेर ।।

सतियों के प्रताप की भगतों, सुनलो अमर कहानी,
गुरसामल ने तनधन जी संग, ब्याही लाडो रानी,
दान दायजा दे बाबुल ने, उसको देई बिदाई,
लाल सुर्ख जोड़े में बेटी, हो गई आज पराई ।। १ ।।

होनी होनहार बलवानी, कोई ना बच पाये,
बिधना ने जो लेख लिखा वो, टाला कभी न जाये,
बीच राह में धोखे से, दुश्मन ने घात लगाई,
समर भूमी में तन धन जी ने, वीर गति तब पाई ।। २ ।।

पति के शव को देख भवानी, क्रोधित हो फुंफकारी,
लेकर नंगी खड़ग हाथ में, दुष्टों को ललकारी,
देख के चण्डी रूप सती का, काँप उठे वो सारे,
इक-इक करके सतवन्ति ने, सारे दुश्मन मारे ।। ३ ।।

रक्त बहा दुष्टों का इतना, लाल हो गया आँचल,
रक्तिम था भू-मण्डल सारा, रक्तिम हो गया बादल,
क्रोध सती का देख के हिल गये, धरती और ये अम्बर,
पति के संग में सती वो होगी, ठाना दिल के अन्दर ।। ४ ।।

कर सौलह सिणगार सती ने, राणा को बुलवाया,
चिता सजाओ हम दोनों की, माँ ने हुकम सुनाया,
धर के भष्म पीठ घोड़े की, बस तुम चलते जाना,
जहाँ पे जाके रूके ये घोड़ा, मंदिर वंही बनाना ।। ५ ।।

शहर झुझणु जाके रूक गया, सतवन्ति का घोड़ा,
जाली राम के पास गया तब, राणा दौड़ा-दौड़ा,
दशो दिशा में गूंज उठे थे, सत के चरचे भारी,
पावन भष्मि के दर्शन को, आये सब नर-नारी ।। ६ ।।

आज खड़ा है उस भूमि पर, माँ का भवन निराला,
राणी सती की ज्योत से फैला, जग में आज उजाला,
"हर्ष" नमन चरणों में तेरे, हे सतियों की रानी,
दुनिया सारी पूज रही है, घर-घर तुझे भवानी ।। ७ ।।

(तर्ज : खादू वाले का सच्चा दरबार देखले...)

कोरस : जली है लंका धू-धू कर,देख मची कैसी भगदड़-२

मेरे हनुमत का रावण कमाल देखले,
तेरी लंका का किया बुरा हाल देखले ।।

माता सिया की सुध लेने ये आया,
धोखे से तूने इसे बंदी बनाया,

कोरस : करी है तूने मनमानी, दूत की गरिमा ना जानी-२
बांका करने सका ना इनका बाल देखले ।।१।।

पापी बता क्या तेरे मन में समाई,
पूंछ में काहे इनके आग लगाई,

कोरस : राम का ये प्यार बंदर, कूद पड़ा लंका अंदर-२,
तेरी नगरी में आया क्या भूचाल देख ले ।।२।।

"हर्ष" बली से मेरे कोई बचा ना,
भारी पड़ा है तुझे सीता चुराना,

कोरस : सारे जग में डंका है, वीर बड़ा ही बंका है,
इनकी दूजी ना कोई मिसाल देखले ।।३।।

(तर्ज : जिन्दगी का सफर...)

तूने क्या क्या किया राम के वास्ते,
तेरी भगती को बाबा सभी जानते,
वीर तुमसा नहीं सारे ब्रम्हाण्ड में,
तेरी शक्ति का लोहा सभी मानते ।। टेर ।।

तीरपापीकासीनेमेंआकेलगा,होकेमुर्छितजमीपेलखनजागिरे,
खलबली राम की मेट दी आपने, बिन तुम्हारे भला प्राण कैसे बचे,
बूंटी जो ना मिली, तो उठा के गिरि,
अपने हाथों में लाये सभी जानते ।। १ ।।

क्यापताथाभलामाँसियाकोजरा,वेषब्राह्मणकाढ़ोंगीनेछलसेधरा,
रामव्याकुलहुएकुछपतानाचला,वनमेंभटकेवोजानेकहाँसेकहाँ,
वेग से उड़ चले, लांघ सिन्धु गये,
माँ की सुध लेके आये सभी जानते ।। २ ।।

''हर्ष''कैसेकरुँमैंबयांदास्तां,किसकदरराखसोनेकीलंकाबनी,
मैंभलाक्याकहुँ,आजक्यानाकहुँ,तेरेआगेकभीनाकिसीकीचली,
राम के दास हो, राम के खास हो,
राम दिल में बसाये सभी जानते ।। ३ ।।

(तर्ज : हारे का तु है सहारा सांवरे...)

दुनिया में कोई सहारा ना मिला,
कश्ति का कोई किनारा ना मिला,
बजरंग दया करदे, इसे पार जरा करदे ।। टेर ।।

मुश्किल हुई है ये जीवन की राहें,
बाबा पकड़ले तु अब मेरी बांहे,
संकट मोचन आओ, मेरे कष्ट मिटा जाओ ।। १ ।।

काली घटायें ये घिर-घिर के आती,
मैं हूँ अकेला ये मुझको डराती,
दुख दूर करो मेरा, मैं ध्यान धरूँ तेरा ।। २ ।।

कितनों को दुखड़ों से तुमने उबारा,
"हर्ष" दयालु को मैंने भी पुकारा,
दरकार मुझे तेरी, पतवार पकड़ मेरी ।। ३ ।।

(तर्ज : फागुन की रुत आई...)

देखो छमा छम नाचे दिवाना श्री राम का,
पैरों में घुंघरू बांध के नाचे,
राम की महिमा गाये, ये ठुमका लगाये,
दिवाना श्री राम का ।। टेर ।।

राम लखन संग है सीता मैया, राम मगन नाचे ये ताता थैया,
राम की धुन में आँखो को मीचे, राम का दर्शन पाये,
ये ठुमका लगाये, दिवाना श्री राम का... ।। १ ।।

राम भजन की मस्ती में खोया, राम की भक्ति में खुद को डुबोया,
हाथों में ले खड़ताल खड़े हैं, राम नाम गुण गाये,
ये ठुमका लगाये, दिवाना श्री राम का... ।। २ ।।

राम कथा में बजरंगी नाचे, झाँझ नगाड़े ढ़प ढ़ोल बाजे,
लाल सिन्दूरी है बाबा का चोला, सीता के मन भाये,
ये ठुमका लगाये, दिवाना श्री राम का... ।। ३ ।।

राम प्रभु का सेवक पुराना, राम चरण में इनका ठिकाना,
"हर्ष" कहे कोई इनसा ना दूजा, राम नाम ही सुहाये,
ये ठुमका लगाये, दिवाना श्री राम का... ।। ४ ।।

(तर्ज : ना झटको जुल्फ से पानी...)

मुझे हनुमान दुखड़ों से बचा लोगे तो क्या होगा,
पड़ी मझधार में नैया निकालोगे तो क्या होगा ।। टेर ।।

बुरे करमों का ही फल है थपेड़े खा रही कश्ति,
किनारे अब मेरी नैया लगा दोगे तो क्या होगा ।। १।।

मैं माना पापी हूँ बाबा मगर तू भी दयालु है,
मुझे पापों से अब मुक्ति दिला दोगे तो क्या होगा ।। २ ।।

खतायें माफ कर मेरी नजर सीधी जरा करले,
मुझे चरणों में अब तेरे बिठा लोगे तो क्या होगा ।। ३ ।।

भरोसा "हर्ष" को बाबा तुम्हारा है बड़ा पक्का,
मुझे भी अब जरा आकर सम्भालोगे तो क्या होगा ।। ४ ।।

(तर्ज : झूमके गाओ भगतो...)

राम गुण गाओ भगतो, ये पावन राम जयन्ति आई,
राम जयन्ति आई पावन राम जयन्ति आई ।। टेर ।।

चैत सुदी की देखो नवमी है प्यारे,
आज धरा पे मेरे राम अवतारे,
कि भजन सुनाओ भगतो,
ये पावन राम जयन्ति आई ।। १ ।।

आज दिवानो दिन बड़ा शुभ आया,
घर-घर खुशियाँ ये मंगल लाया,
कि मंगल गाओ भगतो,
ये पावन राम जयन्ति आई ।। २ ।।

नया साल आया आज खाता बही लायेगें,
"हर्ष" गणेश जी की पूजा करवायेगें,
कि शगुन मनाओ भगतो,
ये पावन राम जयन्ति आई ।। ३ ।।

(कन्या भ्रूण हत्या)

(तर्ज : कन्हैया मेरी बेटी को..)

मैया मैं तेरी बेटी हूँ मतना मुझे तू मार,
बाबुल मुझको भी दो जीने का अधिकार,
फर्क नहीं बेटे बेटी में-२, दोनो हैं इकसार ।। टेर ।।

मुझको भी दुनिया दिखलाओ, मात-पिता का फर्ज निभाओ,
मैं भी माता पाना चाहूँ-२, तेरा प्यार दुलार ।। १ ।।

जननी तुम भी हो इक नारी, कितनी पावन कोख तुम्हारी,
कब्र बनाती हो क्युं इसको-२, थोड़ा करो विचार ।। २ ।।

जन्म से पहले मौत न देना, जीने का हक मुझको देना,
अंश तुम्हारा हूँ मैं माता-२, कर मेरा उद्धार ।। ३ ।।

सीता सती सावित्री जैसी, "हर्ष" बनुंगी मैं भी वैसी,
मेरा सपना पूरा कर दो-२, देखुं ये संसार ।। ४ ।।

(तर्ज : साथी हाथ बढ़ाना...)

अहिलवति के जाये, माँ अहिलवति के जाये,
एक अकेले बालक से खुद तिरलोकी घबराये ।। टेर ।।

पाण्डव वंशी बर्बरीक की, ये है अमर कहानी,
महाभारत देखन की जिसने, अपने दिल में ठानी,
तूफानों से बातें करता, उसका लीला घोड़ा,
तेज हवाओं का रूख जिसने, अपने दम पे मोड़ा ।। १ ।।

समर भूमि की ओर वीर ने, अपना कदम बढ़ाया,
चार भुजाओं वाले के, माथे पे पसीना आया,
सोच में डूबे लीलाधारी, मन में बात विचारे,
जिसकी ओर लड़ेगा बालक, वो तो कभी न हारे ।। २ ।।

झट ब्राह्मण का वेश बनाकर, सन्मुख उसके आये,
तीन बाण से क्या कर लोगे, बालक को समझाये,
बालक बोला एक वाण से, मेट दूं दुनियां सारी,
इस पीपल को बीन्ध दिखाओ, कहने लगे मुरारी ।। ३ ।।

अपनी माँ को वचन दिया था, उसने खूब निभाया,
याचक बन गये जग के पालक, वो दानी कहलाया,
"हर्ष" नमन चरणों में तेरे, हारे के रखवारे,
कलिकाल में श्याम नाम से, पूजे तुझको सारे ।। ४ ।।

अपने आँसुओं को अपनी पलकों पे रोक लो,
बची हुई खुशी भी कंही अश्कों में ना बह जाये,
यूं ना गिरने दो इन अनमोल मोतियों को,
ऐसा ना हो इनके बिना आँख प्यासी ही रह जाये ।।

(तर्ज : मोहे भूल गये सांवरिया...)

अब नैन मेरे भर आये-२,
श्याम विरह में गम के बदरा,
झर झर नीर बहाये ।। टेर ।।

क्युँ छलिये से नेहा लगाया,
काहे गम को पास बुलाया,
ओ निर्मोही अब तो आजा,
रो रो ये दास बुलाये ।। १ ।।

दिल की लगी को कैसे सहें रे,
श्याम सजन बिन कैसे रहें रे,
तेरे दरश की दिल में लगी है,
कौन ये प्यास बुझाये ।। २ ।।

"हर्ष कहे क्युं देर लगाई,
प्रीत निभाजा श्याम कन्हाई,
तन्हाई अब आके मिटादे,
क्युं इतना तरसाये ।। ३ ।।

(तर्ज : खत लिखदे सांवरिया...)

दोहा : कितने बरस से देख रहा था सांवलिये की राहें ।
असर दिखा गई मेरे कान्हा अब तो मेरी आहें ।।

आये खाटू नगरिया से श्याम बाबा, लीले घोड़े की कसके
लगाम बाबा, मैं वारी जाऊँ रे, बलीहारी जाऊँ रे,
बना घर मेरा अब खाटू धाम बाबा, मैं वारी जाऊँ रे... ।।

गंगा जल से चरण धुलाऊँ, लाड लडाऊँ तेरे भोग लगाऊँ,
माखन मिसरी आज तू खाले, रूच-रूच घर में तु भोग लगाले,
आजा तेरी करूं मनवार बाबा, खड़ा सेवा में कबसे तैयार बाबा ।।

आस बड़ी थी घर तू आये, आके बाबा मेरा मान बढ़ाये,
आज सजी है कुटिया मेरी, हो गई दाता मोपे किरपा तेरी,
करूं हाथोंसे तेरा सिंगार बाबा, तेरे चरणोंमें जाऊँ बलिहार बाबा ।।

देखके तुझको सुध खो बैठा, श्याम सलोने तेरा प्रेम अनूठा,
अब तो हो गये वारे न्यारे, "हर्ष" दिवाना तेरी नजर उतारे,
लेऊँ तेरी बलैयां उतार बाबा, लून राई मैं तुझपे दूं वार बाबा ।।

(तर्ज : छोटी सी उमर में...) (बालिका वधु)

आयोड़ा भगत ने बिसराओ ना कान्हुड़ा,
सुणो म्हारी इब थे पुकार, मनसा भगत की पुराओ थे
कान्हुड़ा, खड़्यो थारे झोली मैं पसार ।।

ओऽऽऽ, लाखां भगत को थे काम बणायो,
सेवकियो भी थांसू आस लगायो,
इब थे लोओ म्हाने दुख सुं उबार ।।

ओऽऽऽ, पीड़ घणी है मैं कीने बताऊँ,
थे ना सुणो तो मैं कीने सुणाऊँ,
दुखड़ा हरो इब काँई है उवांर ।।

ओऽऽऽ, कैंया दयालु थे देर लगाई,
बेगा पधारो थे श्याम कन्हाई,
"हर्ष" करे बाबा घणी मनवार ।।

(तर्ज : इस जहाँ की नहीं है तुम्हारी आँखे)

आज किसने ये तुझको संवारा कान्हा,
चान्द धरती पे किसने उतारा कान्हा ।। टेर ।।

तेरा सांवल सा मुखड़ा ये बाँकी अदा,
तेरी चितवन पे कान्हा हुए हम फिदा,
हमने रह-रह के तुझको निहारा कान्हा ।। १ ।।

रूप राशी का गहरा समन्दर है तू,
किस जुबां से कहें कितना सुन्दर है तू,
चैन दिल से चुराया हमारा कान्हा ।। २ ।।

तेरे भगतों पे कैसी ये मदहोशियां,
होश खो बैठे छाई है बेहोशियां,
"हर्ष" वश में जिया ना हमारा कान्हा ।। ३ ।।

(ओ नन्हें से फरिश्ते...)

ओ लीले घोड़े वाले-जीवन तेरे हवाले,
नैया मेरी बचाले ।। टेर ।।

तूफान उठ रहे हैं, कश्ति मेरी पुरानी,
मेरा जोर अब चले ना, तुमको ही है बचानी,
मुझको डरा रहे हैं, देखो ये मेघ काले ।। १ ।।

मजबूर होके बाबा, मैंने तुझे पुकारा,
कितनों को अबसे पहले, तूने ही तो उबारा,
अंधियारों को कन्हैया, देता है तू उजाले ।। २ ।।

तेरे "हर्ष" को भरोसा, आयेगा जल्दी कान्हा,
मेरा दिल धड़क रहा है, तुम देर ना लगाना,
मेरी तरफ दया का, अब हाथ तू बढ़ाले ।। ३ ।।

(तर्ज : ओ राम जी बड़ा दुख दीन्हा...)

ओ श्याम जी पड़ा रहने दे, अपनी शरण में पड़ा रहने दे,
कोई सूझे ना किनारा, मुझे तेरा ही सहारा,
इस दिल की जरा कहने दे, पड़ा रहने दे ।। टेर ।।

दासों में मुझे आज मिलाले,
श्री चरणों के पास बिठाले,
तेरी सेवा मिल जाये, तन मन खिल जाये,
मेरा जनम सफल होने दे, पड़ा रहने दे... ।। १ ।।

दुनिया वाले कुछ ना देते,
गर देते तो गम ही देते,
मुझे जग ने बिसारा, आया दुखड़ों का मारा,
रज चरणों की लेने दे, पड़ा रहने दे... ।। २ ।।

भूला भटका आ ही गया हूँ,
"हर्ष" मैं मंजिल पा ही गया हूँ,
सोई खुशियाँ जगालुं, तेरे दर को दयालु,
मोहे अंसुओ से धोने दे, पड़ा रहने दे... ।। ३ ।।

(तर्ज : ओ बसन्ती पावन पागल...)

ओ सलोने श्याम सुन्दर,
आजा रे आजा कान्हा मेरेSSS ।। टेर ।।

क्या खता हमसे हुई जो तन्हाई हमको मिली,
दे जरा दर्शन दयालु खिल उठे मन की कली,
मेट दे बिरहा की घड़ियां, आजा रे आजा कान्हा मेरेSSS ।।१ ।।

याद कर तूने किया था हमसे जो इकरार है,
वो तेरा वादा निभाले दिल मेरा बेकरार है,
झर रहे नैनों से आँसु, आजा रे आजा कान्हा मेरेSSS ।। २ ।।

कौल करके भूल जाना सांवरे अच्छा नहीं,
प्रेम का धागा हमारा जानले कच्चा नहीं,
''हर्ष'' तेरी राह देखुं, आजा रे आजा कान्हा मेरे SSS ।। ३ ।।

(तर्ज : ओ बाबुल प्यारे...)

ओ श्यामा आ रेऽऽऽ,
तु आजा खाटू के सरदार, लेके मोर छड़ी सरकार,
होके लीले पे असवार, होऽऽऽ ।। टेर ।।

चुन चुन के तिनके मैंने बनाया, छोटा सा अपना घरोंदा,
जोर चला ना तूफां के आगे, तेज हवाओं ने रोंदा,
धुआं दिखता है सबको, जलता दिल दिखता किसको,
आजा अब तो गया हूँ मैं हार ।। ओ श्यामा आ रेऽऽऽ... ।। १ ।।

बिखर गया क्यूँ तिनका-तिनका, मुझको ये गम ना सताये,
गम है कि मेरी बदहाली की, दुनियां क्यूँ बातें बनाये,
हालत देख जरा मेरी, बाबा फेर नजर तेरी,
आजा सुनले तू मेरी पुकार ।। ओ श्यामा आ रेऽऽऽ... ।। २ ।।

भूला नहीं ये "हर्ष" दिवाना, अपना वो गुजरा जमाना,
तेरी शरण में खाटू वाले, मुझको मिला था ठिकाना,
पहले वाली प्रीत दिखा, आके सिर पे हाथ फिरा,
आजा मुझको तेरी दरकार ।। ओ श्यामा आ रेऽऽऽ... ।। ३ ।।

(तर्जः शीशी भरी गुलाब की...)

कान्हा तेरी निगाह ने जादू सा कर दिया,
सीने से दिल निकाल के-२, काबू में कर लिया ।। टेर ।।

देखी जो इक झलक तेरी, दिवाने हो गये,
शम्मा की लौ में जल उठे, परवाने हो गये,
कैसा नशा ये रूप का-२, आँखो में चढ़ गया ।। १ ।।

सपनों में मेरे सांवरे, आते हो क्युँ सदा,
मन को हमारे भा गई, बाँकी सी ये अदा,
आँखो ने तेरे नूर का-२, दीदार कर लिया ।। २ ।।

तेरे दिवाने बन गये, हम तो ये जान ले,
तेरी गली में लुट गये, कान्हा तु मानले,
जलवा तुम्हारा मोहना-२, प्रेमी को छल गया ।। ३ ।।

लिख डाली मैंने प्रेम से, तेरे नाम जिन्दगी,
करना ना दर से दूर तू, तेरे "हर्ष" को कभी,
मुझको बड़े नसीब से-२, मेरा श्याम मिल गया ।। ४ ।।

(तर्ज : जोगी जी धीरे-धीरे...)

कन्हैया होली आई, कन्हैया ओ कन्हैया,
गजब की मस्ती छाई, कन्हैया ओ कन्हैया,
कान्हुड़ा, अइयाँ मत छेड़े, कलाई नाही मोड़े,
मर जाऊँ लाज की मारी रे,
गुजरिया मैं हूँ भोली- कन्हैया ओ कन्हैया,
भिगो ना मेरी चोली-कन्हैया ओ कन्हैया ।।

फागणआयो,मनहरसायो,कोईभरपिचकारीमारे,सररररSSS,
रंग लगावे, अंग लगावे, कोई गूजरी पे रंग डारे, सररररSSS,
कान्हुड़ा सररररSSS, कान्हुड़ा सररररSSS,
गुजरिया बोले थारी, कन्हैया ओ कन्हैया,
क्युं छाती छोले म्हारी, कन्हैया ओ कन्हैया ।।
कान्हुड़ा अइयाँ मत... ।। १ ।।

गोरे तन पर सांवरा, मारे मत पिचकार,
कुंज गली में घेर ली, देख एकली नार,
देख एकली नार कन्हुड़ा मारे मत पिचकार,
लड़ेगा जेठ जेठाणी, कन्हैया ओ कन्हैया,
मेरी सासु मरजाणी, कन्हैया ओ कन्हैया ।।
कान्हुड़ा अइयाँ मत... ।। २ ।।

बीच बजारां रोकली, तू कैसो मोटयार,
जोरा जोरी ना करे, मैं काढ़ुंगी गाल,
मैं काढ़ुंगी गाल कान्हुड़ा, "हर्ष" नन्द का लाल,
नहीं तू टाबर याणो, कन्हैया ओ कन्हैया,
तू छोरा होग्यो स्याणो, कन्हैया ओ कन्हैया ।।
कान्हुड़ा अइयाँ मत... ।। ३ ।।

(तर्ज : सारा सारा दिन...) (गायक- सलीम)

कान्हा मेरे सुन, तेरे बिन, दिन नहीं गुजरता मेरा,
जागुं सारी रात, आवे याद, मन नहीं सम्भलता मेरा,
जल्दी आजा रस्ता जोवे-२, दिल ये बेचारा ऐ श्याम तुम्हारा ।।

ओ निर्मोही आ, ऐसे ना तरसा,
अब तो बगैर तेरे, जिया लागे ना,
नैनों में बस गया प्यारे-२,
प्यारा नजारा, ऐ श्याम तुम्हारा ।। १ ।।

चैन न आये रे, याद सताये रे,
कुछ भी सिवा ना तेरे, अब भाये रे,
प्रेम की गली में मिलता-२,
सबको सहारा, ऐ श्याम तुम्हारा ।। २ ।।

जो ना आओगे, युँ बिसराओगे,
"हर्ष" दिवाने को क्या, जिन्दा पाओगे,
रोते-रोते नाम भगत ने-२,
दिल से पुकारा, ऐ श्याम तुम्हारा ।। ३ ।।

(तर्ज : मोहब्बत की झूठी...)

कलाई पकड़ले, पकड़ता ना कोई,
तेरे दरपे आके, मेरी आँख रोई ।। टेर ।।

जिनको भी दिल के, दुखड़े सुनाये,
वही मेरे अपने, हुए सब पराये,
तेरी आस की मैंने माला पिरोई ।। १ ।।

बड़ी है मुसीबत, बताया न जाये,
अरे बोझ दुख का, उठाया ना जाये,
गमे आसूँ से तेरी चौखट भिगोई ।। २ ।।

अगर है दयालु, दया अब दिखादे,
तेरे "हर्ष" की रोती, आँखे हंसादे,
सिवा तेरे दुनिया में दूजा ना कोई ।। ३ ।।

(राग : स्वरचित)

किसने मेरे श्याम को सजाया कि बनड़ा बनाया,
सलोणा श्याम प्यारा लगे ।। टेर ।।

केशर का टीका तेरे किसने लगाया,
घेर घुमेर बागा कौन लेके आया,
किसने तेरे तन पे सजाया, कि बनड़ा बनाया,
सलोणा श्याम प्यारा लगे ।। १ ।।

किसने बनाया तेरा फूलों का गजरा,
कौन लेके आया तेरे नैनों का कजरा,
किसने तेरी आँखों में लगाया, कि बनड़ा बनाया,
सलोणा श्याम प्यारा लगे ।। २ ।।

पचरंगी पेचा किसने सिर पे सजाया,
मोतियों का कण्ठा बाबा कौन लेके आया,
किसने तेरे गले में पहनाया, कि बनड़ा बनाया,
सलोणा श्याम प्यारा लगे ।। ३ ।।

ठुमका लगाये तेरा लीला थोड़ा थोड़ा,
"हर्ष" चलत देखो नाचे तेरा घोड़ा,
किसने तेरे लीले को नचाया, कि बनड़ा बनाया,
सलोणा श्याम प्यारा लगे ।। ४ ।।

(तर्ज : कैसे पिया से मैं कहुं...)

कैसे कन्हैया से कहुं तेरा, इंतजार है-२,
आँखों में, बस खुमार है दिल, बेकरार है,
आयेगा तू घर में मुझे, ऐतबार है,
आँखों में, बस खुमार है दिल, बेकरार है ।। टेर ।।

आयेगा जब तू साँवरा, फूलों से मैं भर दूगां,
जाने ना दूगां फिर तुझे, अपने वश कर लूगां,
कैसे कहुँ तुमसे मुझे, कितना प्यार है ।। १ ।।

अब तो तेरी उम्र भर, सेवा करता रहूँगा मैं,
हर खुशी हर गम सदा, तुमसे जाके कहुँगा मैं,
दिल की हर धड़कन में तेरा, ही शुमार है ।। २ ।।

इतना है मुझको यकीं, तोड़ेगा दिल ना तू मेरा,
वादा तुमसे "हर्ष" का, गायेगा गुण अब वो तेरा,
कर लिया तुमसे कन्हैया, ये करार है ।। ३ ।।

(तर्ज : कोई जब राह न पाये...)

कोई जब साथ न आये, ये दिल घबराये,
तु खुद को अकेला पाये, ''श्याम की शरण में आ''-२ ।।

अपनो से जो जाते हैं छले,
उनको ये लगाता है गले,
इसकी दया से ही विपदा टले-२,
कोई तुझको छल जाये ना कुछ कर पाये,
तु खुद को अकेला पाये ।। श्याम की शरण... ।। १ ।।

दुखियों का यही है आधार,
मतलब का है साथी संसार,
भगतों के खातिर सदा ये तैयार-२,
कोई तुझको बिसराये, तुझे तड़पाये,
तु खुद को अकेला पाये ।। श्याम की शरण... ।। २ ।।

हार गया जो करके जतन,
जिसने ली बाबा की शरण,
''हर्ष'' सुखों में वो रहता मगन-२,
कोई उलझन उलझाये, सुलझने ना पाये,
तु खुद को अकेला पाये ।। श्याम की शरण... ।। ३ ।।

(तर्ज : इस लिये चुप रहते हैं...)

कौन सुनेगा किसको सुनाऊँ,किस लिये चुप बैठे हो,
छोड़ तुझे मैं किस दर जाऊँ, किस लिये चुप बैठे हो ।। टेर ।।

मेरी हालत देख जरा तू, आँख उठा करके बाबा,
मैं तो तेरी शरण पड़ा हूँ, क्युं मुझको तू बिसराता,
मेरी खता क्या इतना बता दो, किस लिये चुप बैठे हो ।। १ ।।

क्या मैं इतना जान लुं मुझको, समझा तूने बेगाना
वरना दिल के घाव तुझे क्या, पड़ते बाबा दिखलाना,
दर्द बड़े है अब तो दवा दो, किस लिये चुप बैठे हो ।। २ ।।

दुख में कोई साथ ना देता, कैसे तुझको समझाऊँ,
"हर्ष" तेरे बिन कौन सुनेगा, किसको जाके बतलाऊँ,
अपने भगत से कुछ तो बोलो, किस लिये चुप बैठे हो ।।

(तर्ज : क्या से क्या हो गया...)

क्या से क्या हो गया मेरे श्याम तेरे प्यार मे,
यहाँ क्या ना मिला मेरे श्याम तेरे द्वार पे ।। टेर ।।

चलो हमारा भरम तो टूटा जाना ये प्यार क्या है,
कहता था जिसको यार अपना वो दूर हो गया है,
सारी बात भूला मैं मेरे श्याम तेरे प्यार में ।। १ ।।

जिसको मैंने अपना समझा धोखे दिये उसीने,
किया है जो दर पे समर्पण थाम लिया तुम्हीने,
सारे घाव भूला मैं मेरे श्याम तेरे प्यार में ।। २ ।।

जिनसे जाके प्यार मांगा उनसे मिली रूखाई,
दया तुम्हारी अरे दयालु "हर्ष" भगत ने पाई,
सारे गम भूला मैं मेरे श्याम तेरे प्यार में ।। ३ ।।

(तर्ज : वफा जिनसे की बेवफा...)

खता हमसे क्या हो गई है बता,
लगाके गले से क्युं, जुदा कर दिया ।।

छुपा है क्या तुमसे, हूं नादान कितना,
मगर हूँ तुम्हारा, समझले तू इतना,
अकेला मुझे क्युं भला कर दिया ।।

मेरी जिन्दगी को, संवारा है तुमने,
मुझे आज फिर क्युं, बिसारा है तुमने,
बेगाना बता आज क्युं कर दिया ।।

जिये "हर्ष" कैसे, तू इतना बता दे,
या दूर रह कर, जीना सिखा दे,
पराया मुझे आज क्युं कर दिया ।।

(तर्ज : थोड़ा देता है या ज्यादा...)

घड़ी-घड़ी देखुं, घड़ी-घड़ी झाँकु, खोल के मन की खिड़की
तेरा, रस्ता मैं ताँकु ।। टेर ।।

बड़ी उम्मीद में बैठा, कन्हैया आज आयेगा,
उठे जज्बात जो दिल में, वो पल में जान जायेगा ।।

दिवाना श्याम हुँ तेरा, ठिकाना जान ले मेरा,
चले ना सांवरे अब तो, बहाना कोई भी तेरा ।।

उम्मीदें छूट जाये ना, मेरा दिल टूट पाये ना,
भगत की आँख से झरना, कन्हैया फूट जाये ना ।।

तरस खाके दिवाने पे, तू आजा साँवले प्यारे,
तेरे इस ''हर्ष'' की कान्हा, सोई किस्मत जगा जा रे ।।

(तर्ज : तेरे मेरे सपने अब एक रंग हैं ...)

चढ़ा मेरे दिल पे, अब श्याम रंग है,
ये जहाँ जुदा हो भी जाये, हम संग है ।। टेर ।।

सांझ सवेरे मैं तो, गीत तेरे ही गाऊँ,
सेवा करूँ हाथों से, तेरी किरपा पाऊँ,
तू मेरा हमदम साथी ।। १ ।।

श्याम सदा युँ रखना, हाथ दया का तेरा,
तेरी दया से महके, आज ये गुलशन मेरा,
तू मेरा हमदम साथी ।। २ ।।

"हर्ष" तेरी सेवा में, बीते ये जिन्दगानी,
तेरे ही चरणों में बाबा, बाकी उमरिया बितानी,
तू मेरा हमदम साथी ।। ३ ।।

(तर्ज : चान्द मेरा दिल चान्दनी हो तुम...)

चान्द ने पूछा, चान्दनी बता,चान्द सा हसीं और है कहां,
चान्दनी बोली, चान्द प्यारे सुन, श्याम सा नहीं, दूसरा यहाँ ।।
कान्हा की हर अदा, देखी सबसे जुदा,
इन सा ना दूजा और पाओगे,
आँखों में शोखियां, ऐसी मदहोशियां,
इनमें ही खोके रह जाओगे,
यही तो है वही, रूप का खजाना, ये है, ये है, ये है ।। १ ।।
सांवल सा ये बदन, थोड़ा सा बांकपन,
कलियों के जैसी देखो कोमलता,
किरणों की रोशनी, देखी नहीं कहीं,
चन्दा के जैसी प्यारी शीतलता,
इसी का तो हुआ, जग ये दिवाना, ये है, ये है, ये है ।। २ ।।
प्यारी सी ये हंसी, लागे जैसे कहीं,
मुस्काई कलियां मानो उपवन में,
मेरे भोले सनम, ये है तेरा भरम,
हँसते हैं लाखों चान्द चितवन में,
"हर्ष" यही तो है, सांवला सलोना, ये है, ये है, ये है ।। ३ ।।

(तर्ज : सौ साल पहले)

जनमों जनम से बाबा मैं तो तेरा दास हूँ,
आज भी हूँ और कल भी रहूँगा ।। टेर ।।

मुझे अपनी सेवा दी तेरा अहसान कभी ना भूलुं,
तू कितना दयालु है तुझे घनश्याम कभी ना भूलुं,
साँझ सवेरे तेरे चरणों के पास हूँ ।। १ ।।

बस एक तमन्ना है तेरा दीदार मुझे मिल जाये,
मैं भव से तर जाऊँ मेरा सरकार मुझे मिल जाये,
दिल में संजोये बैठा बस ये ही आस हूँ ।। २ ।।

हे नाथ दया करना नजर से दूर ना होने देना,
तेरे "हर्ष" भगत को श्याम कभी मजबूर ना होने देना,
दर पे मैं आया लेके यही विश्वास हूँ ।। ३ ।।

(तर्ज : इक तू है पिया जिसको दिल...)

जब से तू मिल गया,मेरा दिल खिल गया,
तेरी बांकी अदा ने कान्हा मालामाल कर दिया ।।

मैं तो मिटा हूँ कन्हैया तेरे प्यार में,
पाई है खुशियाँ बस तेरे दीदार में,
ये जादूगारे नैना, मेरे दिल का ले गये चैना ।।

तेरी गली में ये मेरा दिल खो गया,
अब तो सलोने मैं तेरा होके रह गया,
ये तूने क्या कर डाला, मैं हो गया रे मतवाला ।।

दिल तो है मेरा दिवाना चित चोर का,
संग में है मेरे कहलाये किसी और का,
क्या खूब मिले हो कान्हा, ये "हर्ष" बना दिवाना ।।

(तर्ज : दुपट्टा तेरा काले रंग का...)

जब पीठ पे श्याम विराजे, तो उछल उछल कर नाचे,
ये घोड़ा देखो नीले रंग का ।। टेर ।।

जहाँ जहाँ होता मेरे श्याम का भजन,
वहाँ वहाँ सांवरे का होवे आगमन,
जब श्याम इसे सहलाते,
तो करता हवा से बातें ।। १ ।।

कोई जब बाबा जी की करता पुकार,
सेवा में हमेशा ही ये रहता तैयार,
जब ऐड़ी श्याम की लागे,
तो पल में सरपट भागे ।। २ ।।

सांवरे से करनी हो कोई अरदास,
लीले के करीब आओ मन में ले आस,
इसे दिल की बात बतादे,
तो कह देगा श्याम को जाके ।। ३ ।।

"हर्ष" कन्हैया तेरा घोड़ा बेमिसाल,
भगतों को प्यारी लागे इसकी ये चाल,
जब दर पे नौबत बाजे,
तो डयोढ़ी उपर नाचे ।। ४ ।।

(तर्ज : जिस गली में तेरा घर...)

जिस गली में तेरा श्याम मंदिर न हो,
उस गली से हमें तो गुजरना नहीं,
जो डगर तेरी चौखट पे जाती न हो,
उस डगर पे हमें पैर धरना नहीं ।। टेर ।।

तेरी सेवा में खुद को लगाता रहूँ,
मैं हमेशा तेरे गीत गाता रहूँ,
तेरी किरपा सदा श्याम पाता रहूँ,
तेरे चरणों की सेवा युं मिलती रहे-२,
ऐ विधाता कभी तू मुकरना नहीं ।। १ ।।

मैंने अपना तुझे श्याम माना यहाँ,
तेरा दर छोड़ अब मुझको जाना कहाँ,
जो भी कहता है कहता रहे ये जहाँ,
तेरे चरणों में मेरा ठिकाना रहे-२,
ओ कन्हैया कभी तू बिछड़ना नहीं ।। २ ।।

जिस जगह पे मेरे श्याम का वास हो,
वो जगह ही मेरे वास्ते खास हो,
तू हमेशा तेरे "हर्ष" के पास हो,
भूल सेवक से गर हो भी जाये कभी-२,
मेरे मालिक कभी तू बिगड़ना नहीं ।। ३ ।।

(तर्ज : जिन्दगी हर कदम इक नई जंग है...)

जिन्दगी में भरा इक नया रंग है,
मैं अकेला नहीं सांवरा संग है ।। टेर ।।

तू ही तू समाया है, मेरे दिल में मेरे श्याम,
तेरे नाम से मेरे, जीवन में आया आराम,
देख मेरी खुशी, ये जहाँ दंग है ।। १ ।।

मैं और तू हो गये हैं, दोनों इक दूजे के मीत,
रहते हैं अब मेरे, होठों पे बस तेरे गीत,
उठ रही दिल में ये, श्याम की तरंग है ।। २ ।।

किस्मत से पाया है, लीले वाले तेरा साथ,
"हर्ष" मेरे सिरपे तू, रखना बाबा तेरा हाथ,
साथ तेरा रहे, बस यही उमंग है ।।

(तर्ज : आये हो मेरी जिन्दगी में...)

जीवन दिया हमारा, तूने संवार बाबा,
अब हो गया तुम्हारा, मैं कर्जदार बाबा ।। टेर ।।

दरबार है निराला, खाटू के श्याम तेरा,
हर इक दिशा में गूंजे, दुनिया में नाम तेरा,
तेरे भक्तों पे चढ़ा है, तेरा खुमार बाबा ।। १ ।।

दुखड़ों से जब भी हारा, तूने ही तो उबारा,
बनके सदा तू आया, इस दीन का सहारा,
उसको मिला जो आया, झोली पसार बाबा ।। २ ।।

कितने दयालु देखे, देखा ना तुमसा दूजा,
अपने भगत की तूने, पीड़ा को समझा बूझा,
इस "हर्ष" को दिया है, तूने निखार बाबा ।। ३ ।।

(तर्ज : मैं तो भूल चली...)

झूला झूले रे नन्द किशोर, कन्हैया बड़ा प्यारा लगे,
खेंचो होले से रेशम की डोर, कन्हैया बड़ा प्यारा लगे ।।

सावन की बरसे है रिमझिम बदरिया,
झूले के आसन पे बैठा सांवरिया,
देखो झाँकी सजी बड़ी जोर, कन्हैया बड़ा प्यारा लगे ।।१ ।।

कोयलिया गाये है मीठे तराने,
नर नारी आये हैं झूला झुलाने,
नाचे वन में मगन होके मोर, कन्हैया बड़ा प्यारा लगे ।।२ ।।

"हर्ष" कन्हैया को झूला झुलाओ,
माथे पे काजल का टीका लगाओ,
आया घर मेरे माखन का चोर, कन्हैया बड़ा प्यारा लगे ।।३ ।।

(तर्ज : स्वरचित)

दोहा : काजलिये की रेख सुं पाती लिखुं सजाय ।
आणो हो तो आन मिलो यो जोबन बीत्यो जाय ।।

झीणी-झीणी चान्दनी में ओल्युँ आवे रे,
बैरी ना आयो रे-२, नादान सांवरा ।। टेर ।।

मिलणे री बेला तांई, चुन्दड़ रंगाई रे,
मैं तो ना ओढ्ढु रे-२, नादान सांवरा ।।

मिलणे री बेला तांई, नथली मंगाई रे,
मैं तो ना पहरूं रे-२, नादान सांवरा ।।

मिलणे री बेला तांई, चुड़लो घड़ायो रे,
मैं तो ना धारूं रे-२, नादान सांवरा ।।

"हर्ष" कान्हुड़े तांई, सेज सजाई रे,
मैं तो ना पोढ्ढु रे-२, नादान सांवरा ।।

(तर्ज : सत्यम शिवम सुन्दरम...)

तन ही कृष्ण है मन ही कृष्ण है,
कृष्ण ही काया है,
झाँको दिल में बंदे, तुझमें कृष्ण समाया है ।।
कृष्णम हरे माधवम्
तुझमें कृष्ण है, मुझमे कृष्ण है, सबमें कृष्ण है ।।

कृष्ण ही जड़ है, कृष्ण ही चेतन, कृष्ण ही है कण कण में,
सभी में है ये देखलो इनको-२, अपने मन आंगन में,
तुझमें बसे हरदम ।। १ ।।

एक ब्रह्म है, एक ही सृष्टि, एक ही जग का पालक,
सकल जहां का दाता है ये -२, हम सब इसके बालक,
हाजिर खड़ा केशवम् ।। २ ।।

प्रेम भाव से, जीवन अपना, इनको करो समर्पण,
"हर्ष" यहां पर कुछ ना तेरा-२, करदे सब कुछ अर्पण,
ले ले हरि शरणम् ।। ३ ।।

(तर्ज : धमाल)

तपती धूप में म्हारो डील सांवरा कालो पड़ग्यो रे,
पगां उघाणो कइयाँ चालुं छालो पड़ग्यो रे ।।

गरमी के मारे पैरां की पिण्डलियां मेरी सूज गई,
ऐसी लाय पड़ी आख्याँ में जालो पड़ग्यो रे ।।

सेवकियो दुख पावे बैठ्यो मंदरिये में मुल्के तू,
बेदरदी सुं कइयाँ म्हारो पालो पड़ग्यो रे ।।

जइयां तइयां खाटू पूच्यों हुयो अचम्भो भारी रे,
दोपहरी में पण्डो मण्ड में तालो जड़ग्यो रे ।।

"हर्ष" कहवे् जीने भी देखो खाटू कानी भागे जी,
प्रेम्यां के लारे यो खाटू हालो पड़ग्यो रे ।।

(तर्ज : मैं ढूढ़ता हुँ जिनको...)

तूफां में घिर गया हूँ, छाये हैं मेघ काले,
मझधार में फँसा हूँ-२, ओ श्याम खाटू वाले रे ।। टेर ।।

लिये पतवार हाथों में, घनी काली सी रातों में,
बड़ा खोया सा है बाबा, भगत तेरी ही यादों में,
अब देर ना लगाओ-२, आजा ओ मुरली वाले रे ।। १ ।।

इशारा गर जो हो जाये, ये बेड़ा पार हो जाये,
दयालु की नजर मुझपे, जरा इक बार हो जाये,
जीवन किया है मैने-२, अब तो तेरे हवाले रे ।। २ ।।

सुना उजड़े चमन तू ही, सदा आबाद करता है,
तेरा ये "हर्ष" रो-रो कर, तेरी फरियाद करता है,
इनकार ना सुनुंगा-२, इकरार करने वाले रे ।। ३ ।।

(तर्ज : अल्लाहू अल्लाहू...)

तूही तू तूही तू तूही तू,
तूही तू तूही तू, कान्हा तू ।। टेर ।।

आँखो में तूही है मेरे खाटू वाले,
साँसो में तूही है मेरे लीले वाले ।। १ ।।

चन्दा सितारों में मैंने तुझे पाया,
सारे नजारों में मैंने तुझे पाया ।। २ ।।

हारे के साथी हो कहता है जमाना,
तेरी दया का ना कोई भी ठिकाना ।। ३ ।।

बस तेरी सेवा में बीते ये उमरिया,
"हर्ष" दिवाना है तेरा ओ सांवरिया ।। ४ ।।

(तर्ज : यो जन्मयो जद के खायो...)

तू लागे कितणो प्यारो,
साँची साँची बता कुण सिणगार्‌यो ।।

श्यामल सो मुखड़ो है तेरो,
चन्दन लेप बणायो गोरो ।।

केशरियो टीको माथे पर,
आख्याँ में काजल सार्‌यो ।।

घेर घुमेरो तने पिरायो,
पचरंगी बागो न्यारो ।।

फूलां को तेरो बंगलो बणायो,
मुलके श्याम सजन म्हारो ।।

"हर्ष" श्याम की निजरां उतारो,
चालो लूण और राई वारो ।।

(तर्ज : तेरी जवानी तपता महिना...)

तेरी दया से चलता गुजारा बाबा हमारा,
विपदा में तूही बना है सहारा बाबा हमारा ।। टेर ।।

सोते या उठते मुख से हमारे, तेरा नाम निकले,
बदले तो बदले चाहे जमाना, पर तू ना बदले,
भंवर से हमेशा कश्ति को बाबा, दिया है किनारा ।। १ ।।

हमने किया है खुद को दयालु, तेरे हवाले,
चिन्ता करे क्युँ तूफां में नैया, तूही सम्भाले,
भटके को देता अरे लीले वाले, तुही सहारा ।। २ ।।

यही है तमन्ना चौखट से तेरी, कभी ना जुदा हों,
करुणा के सागर दीनों पे युहीं, करुणा सदा हो,
''हर्ष'' को मिले बस हर इक जनम में, दर ये तुम्हारा ।। ३ ।।

(तर्ज : दिल हूम-हूम करे...)

दिल श्याम श्याम कहे खिल जाये,
मन श्याम श्याम जपे मुस्काये,
इक छाप अनोखी तेरी मेरे हृदय पे लग जाये ।। टेर ।।

इस मन में बसा कान्हा, हँस हँस के बताऊँ,
अब और किसी को कैसे, इस दिल में बिठाऊँ,
ओ मेरी आँखो में, तेरा चंचल रूप समाये,
मेरा मन सांवरिये, तेरी चितवन में खो जाये ।। १ ।।

इक पल में किया तूने, इस दिल को दिवाना,
अब किसको कहूँ जाके इस दिल का फसाना,
ओ मेरे मोहना, तेरी पल-पल याद सताये,
मेरे मन की वीणा, बस गीत तुम्हारे गाये ।। २ ।।

इस दिल की लगी प्यारे, किस किसको बतायें,
इक पल ना मिले चैना, कहाँ दिलको लगायें,
ओ मेरे सांवरे, तुझे व्याकुल "हर्ष" बुलाये
मेरे नैन निगोड़े, बिन देखे रह ना पाये ।। ३ ।।

(तर्ज : मैं तो भूल चली बाबुल..)

देखो आये है खाटू नरेश सिंगार बड़ा प्यारा लगे,
सजे फूलों के गजरे अनेक सिंगार बड़ा प्यारा लगे ।।

चम्पा चमेली के हार सजे हैं,
केशरिया इत्तर की खूशबु उड़े है,
आज पहने है बागा विशेष ।। १ ।।

मोर मुकुट पे किलंगी की शोभा,
मुखड़े पे चमके है किरणों की आभा,
बड़ा दिलकश कन्हैया का वेश ।। २ ।।

बाबा की प्यारी सी झांकी सजी है,
किर्तन में भगतों की भीड़ लगी है,
बड़ा सुन्दर है ये परिवेश ।। ३ ।।

छप्पन तरह का भोग लगा है,
दूध कटोरा ले "हर्ष" खड़ा है,
लो बनारस का बीड़ा है पेश ।। ४ ।।

(तर्ज : जुबां पे लागा लागा रे...)

निगाहें तीखी तीखी रे गजब सांवरा,
जुबां है मीठी-मीठी रे, गजब सांवरा ।। टेर ।।

कभी इठला के चलना, कभी बल खाके चलना,
चाल है टेढ़ी मेढ़ी रे, गजब साँवरा ।। १ ।।

अजब आँखों की मटकन, गजब जुल्फों की लटकन,
छवि है प्यारी प्यारी रे, गजब सांवरा ।। २ ।।

डरे जमना पे गोरी, करे कपड़ों की चोरी,
कहीं पे जोरा जोरी रे, गजब सांवरा ।। ३ ।।

तेरी चितवन है बाँकी, "हर्ष" सोणी सी झाँकी,
नजर है जादूगारी रे, गजब साँवरा ।। ४ ।।

(तर्ज : झूमके गाओ भगतो...)

नि भंगड़ा पाओ भगतो, के मैनु नचके श्याम रिझाणा,
नचके श्याम रिझाणा, मैनु नचके श्याम रिझाणा ।। टेर ।।

साडा ये दिवाना दिल बल्लियों उछलदा,
बावला हुआ रे अज बल्ले बल्ले करदा,
नि शगन मनाओ भगतो, के मैनु नचके श्याम रिझाणा ।। १ ।।

किसनु दिखावां दिल अपणा मैं खोलके,
मचल रहा है बैरी बाबा बाबा बोलके,
नि भजन सुणाओ भगतो, के मैनु नचके श्याम रिझाणा ।। २ ।।

अज मेरे सांवरे ने कित्ता है निहाल वे,
अपणे भगत दी करली सम्भाल वे,
नि तालियाँ बजाओ भगतो, के मैनु नचके श्याम रिझाणा ।। ३ ।।

दिल करदा है मेरे श्याम नुं नचावां,
"हर्ष" दिवाने नाल ठुमका लगावा,
नि ढोल बजाओ भगतो, के मैनु नचके श्याम रिझाणा ।। ४ ।।

(तर्ज : पीतल की मेरी गागरी)

निगोड़ी तेरी बांसुरी, कान्हुड़ा मेरी नीन्द उड़ाये रे ।। टेर ।।

दिन में घर का काम करूं रे, "रात को मैं थक जाऊँ"-२ सांवरे,
मीठी-मीठी तान सुनु फिर, "चैन से सो ना पाँऊ"-२, सांवरे,
मचल जाये सांस रे, ये जुलमी चैन चुराये रे ।। १ ।।

झीनी-झीनी पड़े चान्दनी, "पायल थिरकन लागे"-२ हाय रे,
सर-सर, सर-सर हवा चले जब, "आंचल सरकन लागे"-२ हाय रे,
ठिठोरी हुई गांव में, ये बैरन नाच नचाये रे ।। २ ।।

कौन जनम का बैर निकाले, "मोसे ओ निर्मोही"-२ बोल रे,
"हर्ष" तेरी मुरली की धुन में "रहती खोई-खोई"-२, बोल रे,
दिवानी हुई गूजरी, ये दर्द सहा ना जाये रे ।। ३ ।।

(तर्ज डोरी खेंच के राखिजो...)

ढ़ीली छोड़ियो ना डोरी,सम्भालता चालो,
हाथां में निशान लेके नाचता चालो ।।

पैदल चाले पगां चलणिया,
पसर के जावे पेट पलणिया,
थे भी टोलियाँ बणाके घूमर घालता चालो ।।

थक जावे कोई भगत घणेरो,
टाबर हो या बड़ो बडेरो,
बाँकी थाम के कलाई सागे चालता चालो ।।

माँ भैणा को साथ न छोड़ो,
श्याम निशान ले मतना दौड़ो,
सगला सांवरे ने भजन सुणावता चालो ।।

श्याम ध्वजा की गरिमा जाणो,
जूठो हाथ कदे ना लगाणो,
"हर्ष" धरती से बचाके थे उछालता चालो ।।

(तर्ज : अँखियों के झरोखों से...)

पलकों के हिन्डोले में, जब देखुं मैं झांक के,
घनश्याम नजर आये, मेरा श्याम नजर आये,
बंद करके इन आँखों को, जब बैठुं मैं ध्यान में,
घनश्याम नजर आये, मेरा श्याम नजर आये ।।

जिस दिन से मुझे सांवरे की लगन लगी है,
दिल में मेरे जैसे कोई इक अगन जगी है,
ये आन बसा हो ज्युं, मेरी सांसो के तार में ।।

नस नस में मेरे श्याम की सरगम सी बजे है,
चाहत तेरी कान्हा मेरे गीतों में ढ़ले हैं,
इस मन को टटोलुं तो, मेरे नैनों के सामने ।।

इक दिल था मेरे पास जो अब तेरा हुआ है,
खोकर इसे पाया तुझे तू मेरा हुआ है,
जिस ओर नजर फेरे, अब "हर्ष" दिवाना ये ।।

(तर्ज : गाड़ी वाले मुझे बिठाले...)

फाड़ दे छप्पर-चलादे चक्कर,
करदे मालामाल-दिखा तेरी लीला ।। टेर ।।

मेरे घर के कानी तु, लिक्षमी जी ने मोड़ धणी,
तेरे सै के छानी है, मंदी आई भोत घणी,
मेरे भी परिवार ने दे दे, सुख को सब सामान ।।

टाबरिये पे दातारी, तेरी किरपा कद होसी,
दुनिया ने तु बांट रह्यो, मेरो नम्बर कद आसी,
बणी रह्वे ई दुनिया मांही, मेरी ऊँची शान ।।

तेरी किरपा सुं मेरा, पौ बाराह हो जावेला,
"हर्ष" भगत का दुख सारा, छू मन्तर हो जावेला,
श्याम नाम को गाड़ दयुं झण्डो, घर-घर करूं बखान ।।

(तर्ज : मावड़ती म्हारी सुण लेसी)

बनड़ो सो बणकर बैठ्यो जी, खाटू को सरदार,
खाटू को सरदार म्हारो, लीले को असवार ।। टेर ।।

मोर मुकुट कानां में कुण्डल, गल मोतियन को हार,
भांत-भांत का गजरा सोहे, अलबेलो सिणगार,
एक बार जो थाने निरखे, निरखे बारम्बार ।। १ ।।

मुख चन्दन को लेप लग्यो है, सांवलिया सरकार,
मोर छड़ी हाथां में सोवे, थारे लखदातार,
केशरिया बागे की बाबा, शोभा अपरम्पार ।। २ ।।

सिर पर पेचो कमर पे फेंटो, लीले का असवार,
ठुमक-ठुमक थारो लीलो चाले, चलगत की बलिहार,
"हर्ष" भगत थारा बण्या बाराती, गावे मंगलाचार ।। ३ ।।

(तर्ज : सोणी दे नखरे सोणे लगदे...)

बाँके की चितवन प्यारी लगती मोहे,
बाँके की चितवन प्यारी लगती ।। टेर ।।

चाल तेरी मस्तानी, ओ रे कान्हा,
सारी दुनिया दिवानी, ओ रे कान्हा,
तेरे नाम प्यारे लिखदी, ओ रे कान्हा,
मैंने सारी जिन्दगानी, ओ रे कान्हा,
आँखो की मटकन प्यारी लगती मोहे ।। १ ।।

तेरा पेचा है निराला, ओ रे कान्हा,
तेरा बागा मतवाला, ओ रे कान्हा,
तेरे रूतबे ने कान्हा, ओ रे कान्हा,
मेरा दिल है निकाला, ओ रे कान्हा,
पीली सी अचकन प्यारी लगती मोहे ।। २ ।।

तेरी तिरछी निगाहें, ओ रे कान्हा,
तेरी चंचल अदायें, ओ रे कान्हा,
तेरा "हर्ष" खड़ा है, ओ रे कान्हा,
आज खुद को लुटाये, ओ रे कान्हा,
बालों की लटकन प्यारी लगती मोहे ।। ३ ।।

(तर्ज : दीवानो से ये मत पूछो...)

बेगाने बनकर बैठे हो, दीवाने की क्या फ़िक्र नहीं,
तुझे मान के शम्मा जल बैठा,
परवाने की क्या फ़िक्र नहीं ।। टेर ।।

औरों को लुटाते रहते हो, पर मैं रो कर रह जाता हूँ,
तू इतना जरा मुझसे कहदे, क्या मेरी दुआ का असर नहीं ।।

जो दूर है तेरी चौखट से, उनका भी भला कर देते हो,
मैं सामने बैठा हूँ फिर भी, क्युँ मुझपे तेरी नजर नहीं ।।

लाखों का नसीबा बदल दिया, जो शरण तुम्हारी आन पड़े,
मैं भी शरणागत हूँ तेरा, क्युँ किरपा तेरी इधर नहीं ।।

तूने ही अगर जो ठुकराया, फिर तूही बता मैं जाऊँ कहाँ,
इस "हर्ष" का बाबा बिन तेरे, दुनिया में कोई बसर नहीं ।।

(तर्ज : अफसाना लिख रही हूँ...)

बैठा हूँ आस लगाये सरकार ना आये,
अब थाम लो पतवार बेड़ा पार हो जाये ।। टेर ।।

किसको पुकारूँ सांवरे "कुछ सूझता नहीं"-२,
बस एक नजर किरपा की दिलदार हो जाये ।। १ ।।

कमजोर मेरे हाथ है "कश्ति पुरानी है"-२,
मुझपे भी देव दयालु उपकार हो जाये ।। २ ।।

लाखों उबारे आपने "मुझको उबार लो"-२,
मेरी उम्मीदों का सपना साकार हो जाये ।। ३ ।।

ऐ श्याम जीवन डोर ये "अब तेरे हाथ है"-२,
तेरे "हर्ष" भगत का बाबा उद्धार हो जाये ।। ४ ।।

(तर्ज : थोड़ा देता है या ज्यादा...)

भूल हुई कांई, थे कइंयाँ रूस्या हो,
टेर सुणो सांवलशा म्हारी, कइयां सुत्या हो ।।

घणी मिन्नत करूं थारी, भुलाद्यो भूलां थे म्हारी,
अगर थे ना सुणोगा तो, बताओ सुणसी कुण म्हारी,
टाबरिये कानी, क्युँ आख्याँ मिच्या हो ।।

बड़ो हूँ बावलो बाबा, बणाओ सावलो बाबा,
करो किरपा दयालु मैं, घणो उतावलो बाबा,
कानां ने थारे, थे कइयाँ भिच्याँ हो ।।

भगत नादान है बाबा, क्षमा को दान द्यो बाबा,
घणो दुख को सतायो हूँ, जरा सो ध्यान द्यो बाबा,
"हर्ष" भगत न थे, क्युँ भुल्या बैठ्या हो ।।

(तर्ज : मत जइयो नोकरिया छोड़ के...)

मत जइयो कांकरिया मारके,
मोहे सासु लड़े ललना,
मोहे सासु लड़े, मोहे ननदी लड़े ।। टेर ।।

श्याम मेरी मटकी ना फोड़ो, हाथ तेरे कछु नाही लगेगो,
जिया पे मोरे बन आयेगी, तोको कछु भी नाही मिलेगो,
ताने देगें घर वाले मोहे, साँची कहुं ललना ।।

बैंया पकड़के चुपके से युँ, मटकी गिराना ठीक नहीं है,
देख अकेली जान के लाला, मुझको सताना ठीक नहीं है,
शोर मचाऊँगी जो ना छोड़ो, बैंया मेरी ललना ।।

नार पराई ओरे कान्हा, लाज शरम से मर जायेगी,
कुछ ना बिगड़े तेरो जुल्मी, मेरी हँसाई हो जायेगी,
"हर्ष" मोहे तु घर जाने दे, पइयाँ पड़ुं ललना ।।

(तर्ज : बिल्लो रानी...)

कोरस : मन से जो भी ध्यायेगा, है विश्वास तो पायेगा ।।

तेरे पलमें ये भरदे भण्डार देखले,
खाटू वाले के झोली तु पसार देखले ।।

जिसने भी चौखट पे अरजी धरी है,
लीले वाले ने उसकी झोली भरी है,

कोरस : महिमा को वो जान गया, इसकी लीला मान गया,
तु भी जाके भगत इक बार देखले ।।१।।

कलयुग में बाबा सा देव नहीं है,
बिना मांगे दे ऐसा सेठ नहीं है,

कोरस : खोल खजाना बैठा है, मन इच्छा फल देता है,
तु भी करके भगत ऐतबार देखले ।।२।।

इसकी दया का नहीं कोई ठिकाना,
युँही नहीं है इसका "हर्ष" दिवाना,

कोरस : जो भी इसकी शरण पड़ा, बाबा उसके साथ खड़ा,
तेरी किस्मत को देगा संवार देखले ।।३।।

(कृष्ण जन्म)

(तर्ज : सुपणे में सखी..)

मथुरा में जायो, देखो नन्द को लाल,
सांवली सुरतिया, मोहिनी मुरतिया,
पापी कंस को काल ।। टेर ।।

आधी रात की पावन घड़ियाँ, तिरलोकी अवतारे, धरा पे देखो,
धन-धन कोख देवकी तेरी, लीन्हो हरि अवतार ।।

काराग्रह के खुल गये ताले, सोये सिपाही सारे, देखो जी देखो,
वसुदेव जी चल दिये लेकर, माँ यशुमति के द्वार ।।

कड़-कड़कड़के बिजलीरानी, मेघ घमाघम गरजे, रे गरजे देखो,
इन्द्र देवता आज खुशी से, बरसे मूसल धार ।।

शेषनाग ने फण फैलाकर, कान्हा की छत्तरी बनाई, बनाई देखो,
श्री चरणों को छूना चाहे, जमना जी की धार ।।

भोर भई है वृन्दांवन में, शंख नगाड़े बाजे, रे बाजे देखो,
"हर्ष" यशोदा के घर मारी, लल्ला ने किलकार ।।

(तर्ज : दिल में तुझे बिठा के...)

मांगा न कुछ भी ज्यादा, ख्वाइश है इतनी बाबा,
पलकें जरा उठाओ, ऐ श्याम मुस्कुराओ ।। टेर ।।

मन के इस मंदिर में मैने, प्रेम का दीप जलाया,
आशाओं की ज्योत जलाकर, तेरे द्वारे आया,
जीवन मेरा संवारो, मुझको जरा निहारो,
पलकें जरा उठाओ, ऐ श्याम मुस्कुराओ ।। १ ।।

श्याम तुझे मैं हँसता देखुं, जब तेरा दर्शन पाऊँ,
तेरी छवि को देखके कान्हा, पुलकित मन हो जाऊँ,
मूरत सलोनी तेरी, अरजी है इतनी मेरी,
पलकें जरा उठाओ, ऐ श्याम मुस्कुराओ ।। २ ।।

लखदातारी से ना मागुं, तो मैं मांगु किससे,
"हर्ष" खड़ा है बनके सवाली, नैन मिलाओ मुझसे,
दीनों के नाथ बोलो, आँखो को अब तो खोलो,
पलकें जरा उठाओ, ऐ श्याम मुस्कुराओ ।। ३

(तर्ज : कहने को जश्ने बहारां है...)

मुस्कां ये श्याम तुम्हारी है, लाखो पे आज ये भारी है,
फूल की कलियाँ खिली हों जैसे मधुवन में,
छुपा है कैसा राज तुम्हारी चितवन में,
खोये खोये भक्त तुम्हारे हैं,थम गये वक्त के धारे हैं,
हर लब पे मीठी-मीठी सी आहें हैं ।। टेर ।।

जादू सा क्या तुझमें भरा, सोच रहा कबसे खड़ा,
कोई कैसे करें हम वश में जिया हमारे,
ऐसा चला तीरे नजर, घायल है आज जिगर,
कोई कैसे कहें हम हो गये प्रेम के मारे,
सांसो में तू है बसा, आँखो में तेरा नशा,
मदहोशी सी छाई कैसी, सांवरे SSS... ।। १ ।।

होंठ लगी बांसुरिया, तेरे ओ सांवरिया,
हमें मीठे मीठे नगमें आज सुनाये,
मनभावन तेरी अदा, तुझपे हम आज फिदा,
ये मोहनी मूरत मन को श्याम लुभाये,
जलवा ये मार गया, अपना दिल हार गया,
मदहोशी सी छाई कैसी, सांवरे SSS... ।। २ ।।

कैसा ये जाल बुना, गुमसुम हूँ तेरे बिना,
तेरी बाँकी अदा ने हमको आज फंसाया,
"हर्ष"कहे ओ दिलबर, सीधी कर श्याम नजर,
इन नैनों का खंजर तूने खूब चलाया,
पलकें मेरी सुनती नहीं, तुझसे ये हटती नहीं,
मदहोशी सी छाई कैसी, सांवरे SSS... ।। ३ ।।

(तर्ज : और इस दिल में...)

मुझको यकीं है होगी सुनाई,
लेकिन दिल में ना अब है समाई ।। टेर ।।

सुना है मैंने अब तक, मगर देखा नहीं है,
जहाँ में तेरे जैसा, कोई दाता नहीं है,
मुझपे किरपा हो तो मानुं "तू है दया निधान"-२,
मैंने सुनी वो कहके सुनाई, लेकिन दिल में ना अब ... ।। १ ।।

मेरा भी काम होगा, मुझे ये भी पता है,
मगर जल्दी बड़ी है, समझले ये खता है,
कल जो देने वाला है वो "दे दे मुझको आज"-२,
तूने ही हरदम पीड़ मिटाई, लेकिन दिल में ना अब ... ।। २ ।।

भगत को देना है बस, तू इतना सोच लेगा,
तेरी इस सोच से ही, मेरा हर काम होगा,
राजाओं का राजा है तू, "दे दे दया का दान"-२,
"हर्ष" भरोसा तेरा कन्हाई, लेकिन दिल में ना अब ... ।। ३ ।।

(तर्ज : गुरुदेव से निराला..)

मेरे श्याम सा निराला, कोई और नहीं है,
हम दीनों का रखवाला, कोई और नहीं है ।। टेर ।।

जीवन की बाजी जो हारा, "उसका बना सहारा"-२,
जिसकी नैया डूब रही थी, "उसको दिया किनारा"-२,
हमको राह दिखाने वाला-२, कोई और नहीं है ।। १ ।।

बनके सुदामा जो भी आया "कर दिये वारे न्यारे"-२,
किस्मत से ज्यादा ये देता, "भर देता भण्डारे"-२,
सोये भाग्य जगाने वाला-२, कोई और नहीं है ।। २ ।।

कहने की दरकार नहीं है, "बिन मांगे मिल जाये"-२,
अपने सेवक की मंशा का, "पता इसे चल जाये"-२,
दुख में साथ निभाने वाला-२, कोई और नहीं है ।। ३ ।।

"हर्ष" जरा चरणों में झुक जा, "ये है सच्चा साथी"-२,
तूफानों में भी दीपक की, "जलती रहेगी बाती"-२,
हमको गले लगाने वाला-२, कोई और नहीं है ।। ४ ।।

(तर्ज : स्वरचित)

मेरा दिल है बड़ा उदास,
प्रभु आ जाओ मेरे पास ।। टेर ।।

आज मुसीबत आन पड़ी है,
तेरी अब दरकार बड़ी है,
मैं बिल्कुल हुआ निराश ।। १ ।।

लाख जतन करके मैं हारा,
आखिर तुझको श्याम पुकारा,
तेरा सेवक हुआ हताश ।। २ ।।

कुछ भी मुझको रास न आये,
तू आये तो चैन आ जाये,
मेरा बना रहे विश्वास ।। ३ ।।

"हर्ष" भगत को आन सम्भालो,
लाचारी से मुझे बचालो,
मेरी तुमसे है अरदास ।।

(तर्ज : मेरा परदेशी ना आया...)

मेराSSS सन्देशा ना आया,
तकदीरों से श्याम मिले हो,
हाथों में ले हाथ चले हो, काहे युँ बिसरायाSSS ।।

जाने कैसी भूल हुई है, भूल गया निर्धन को,
मन का पंछी तड़प रहा है, श्याम तेरे दर्शन को ।।

पहले तूने प्रीत दिखाई, प्रेम का पाठ पढ़ाया,
दूर किया क्युँ जान न पाया, श्याम तेरी क्या माया ।।

"हर्ष" भगत से ओ सांवरिये, रूठ गया क्युं कहदे,
नादां है ये सेवक तेरा, भूल मेरी बिसरादे ।।

(तर्ज : मेरे बाँके बिहारी लाल...)

मेरी नाव पड़ी मझधार,
सम्भालो लीले के असवार,
भरोसा तेरा है- भरोसा तेरा है ।। टेर ।।

काली घटाओं ने कश्ति को घेरा,
सूझे नहीं कुछ छाया अंधेरा,
मेरी थाम जरा पतवार ।। १ ।।

तेरे हाथों में मेरी लाज का गहना,
मैंने कवच तेरे नाम का पहना,
मुझे तेरी है दरकार ।। २ ।।

हारे के साथी आजा दे दे सहारा,
"हर्ष" दिवाना तेरा दुखड़ो से हारा,
मैंने खाई है अपनों से मार ।। ३ ।।

(तर्ज : तुझे सूरज कहुं या चन्दा...)

मेरी नाव भंवर में डोले, डगमग खाये हिचकोले,
कहीं डूब न जाये बाबा, अब तो आके सुध लेले ।। टेर ।।

लाचार हुई है बाहें, पतवार सम्भल ना पाये,
बिन तेरे कौन दयालु, मेरी कश्ति पार लगाये,
इक अनजानी चिन्ता में, मन खोया होले होले ।।

मजबूर हुआ हूँ कितना, जग को कैसे बतलाऊँ,
दिल चोर नहीं है मेरा, कैसे विश्वास दिलाऊँ,
मेरी बंद पड़ी किस्मत के, ताले अब तू ही खोले ।।

तेरी दातारी के किस्से, दुनिया से सुने है दाता,
अब महर करे तो जानू, हारे का तु साथ निभाता,
तेरा "हर्ष" अकेला कहदे, दुखड़ो को कैसे झेले ।।

(तर्ज : मेरे सामने वाली खिड़की...)

मेरे श्याम तुझे ये दिवाना,
इक चान्द का टुकड़ा कहता है,
इक रोज ना देखुं तो ये दिल,
कुछ उखड़ा उखड़ा रहता है ।। टेर ।।

घनश्याम हमारे दिल में तु, चुपके से आकर उतर गया,
कल तक तो ये दिल मेरा था, पर आज न जाने किधर गया,
दिन रात हमारे नैनों में, ये चंचल मुखड़ा रहता है ।। १ ।।

जिस रोज से देखा है तुझको, हम सुध बुध सारी भूल गये,
बस याद तुम्हारी रहती है, ये दुनियां सारी भूल गये,
दीदार तेरा जब तक ना हो, दिल उजड़ा उजड़ा रहता है ।। २ ।।

सिंगार तेरा ऐ "हर्ष" मेरे, इस दिल को लुभाता चला गया,
श्रद्धा में डुबोता चला गया, और अपना बनाता चला गया,
आँखों में मोहिनी रूप तेरा, ये चिकना चुपड़ा रहता है ।। ३ ।।

(स्वरचित)

मेरे सांवरिया सरकार दया की बरखा हो,
मुरझा जाये बाग हमारा तुझपे दारमदार,
दया की बरखा हो ।। टेर ।।

महक रही थी बगिया मेरी श्याम दया जब तेरी थी
कर बैठा नादानी ऐसी भूल बड़ी ये मेरी थी,
भूल क्षमा कर अब तो मुझको तेरी है दरकार ।। दया की... ।। १ ।।

सूखन लागी डाली डाली पत्ता-पत्ता टूट रहा,
तेज हवाओं के झोंको से सेवक तेरा जूझ रहा,
बिन तेरे अब कौन सम्भाले नैया है मझधार ।। दया की... ।। २ ।।

बीते दिन जब याद करूं तो अन्तर्मन ये रोता है,
नीन्द नहीं आँखों में मेरी तु क्युं चैन से सोता है,
इस निर्बल को आन सम्भालो लीले के असवार ।। दया की... ।। ३ ।।

कब बीतेगें पतझड़ के दिन कब हरियाली छायेगी,
"हर्ष" दिवाने के जीवन में कब खुशहाली आयेगी,
ऐसा कुछ कर आज दयालु देखे ये संसार ।। दया की... ।। ४ ।।

(तर्ज : माँ दिये मूरत ये...)

मेरे सांवरिया नैन जरा अब खोल,
बिकने आया, दर पे तेरे-२, क्या देगा तू मोल ।। टेर ।।

जिसकी कोई कीमत ना हो, कौन खरीदे उसको,
बेबश और लाचार बड़ा हूँ, और कहुं क्या तुझको,
मैं निर्बल कमजोर हूँ बाबा, हो गया डांवाडोल ।। १ ।।

तुमसे अच्छा कौन मिलेगा, मुझको मेरा मालिक,
अगर खरीदेगी दुनिया, मल देगी मुख पे कालिख,
अपनी हालत तुझसे कहदी, देदी सारी पोल ।। २ ।।

चरणों की सेवा मिल जाये, करूं गुलामी तेरी,
अगर मैं खाली लौट गया तो, हो बदनामी तेरी,
"हर्ष" तुझे महंगा लागे तो, ले ले तु बिन मोल ।। ३ ।।

(तर्ज : हम भूल गये रे हर बात...)

मैंने इतनी करी मनुहार मगर क्युं श्याम नहीं आये,
मैं तो कबसे करूं इंतजार, मगर क्युं श्याम नहीं आये ।।

अरमान बड़े थे सांवरिया, प्रेमी के घर में आयेगा,
मैं चंवर डुलाऊंगा उनको, वो रूच रूच भोग लगायेगा,
देखो राह तके परिवार, मगर क्युं श्याम नहीं आये ।। १ ।।

अब आँख से झरना फूट गया, क्युं श्याम सलोना रूठ गया,
बरसों से संजो कर रखा जो, क्या सपना मेरा वो टूट गया,
बहे आँख से आँसू हजार, मगर क्युं श्याम नहीं आये ।। २ ।।

क्या "हर्ष" तेरे लायक ना था, क्या मेरी प्रीत नहीं भाई,
या कुटिया मेरी छोटी थी, जो तुझको रास नहीं आई,
था मुझको बड़ा ऐतबार, मगर क्युं श्याम नहीं आये ।। ३ ।।

(हरियाणवी भजन)

(तर्ज : मैं हुँ छोरी मालन की...)

मैं हुँ देसी छोरा तेरे भोग लगावण आया सुं,
खाले बाबा मेरे रै ।। टेर ।।

खीर चूरमा लाड्डु पेड़े बरसां तै तु खावे सै,
चूर पीण्डिया देसी घी का तने जिमावण आया सुं,
खाले बाबा मेरे रै ।। १ ।।

कोई ल्याया सेब सन्तरे कोई चीकू ल्याया सै,
काचर और मतीरे मैं तो ताजा तोड़के ल्याया सुं,
खाले बाबा मेरे रै ।। २ ।।

काजु पिस्ता दाख छुआरे खा खा के तु रंजग्या सै,
सूखे बेर बेरड़ी के मैं ताजा तोड़ के ल्याया सुं,
खाले बाबा मेरे रै ।। ३ ।।

एक चीज जो सारे ल्यावे "हर्ष" भगत भी ल्याया सै,
भैंस के ताजा दूध का माखन तेरे भोग लगाया सुं,
खाले बाबा मेरे रै ।। ४ ।।

(तर्ज : क्या हुआ तेरा वादा...)

मैं हुआ तेरा बाबा, ये मेरा तुमसे वादा,
भुलुगां मैं जिस दिन तुम्हें,
वो दिन जिन्दगी का आखिरी दिन होगा ।।

ओ खाटू वाले तूने किया जो, कौन करेगा इतना भला,
तूने जो हर लिये, दास के दुखड़े, कौन हरेगा दूजा बता,
तेरी किरपा क्या खूब हुई, मैं बयां जग में कैसे करुं ।।

चुक ना सकेगा, अहसान तेरा, बिक भी जाऊँ गर मैं कहीं,
जब-जब बाबा, तुझको पुकारा, मैंने तो पाया तुझको वहीं,
तेरी चौखट पे क्या ना मिला, मैं बयां जग में कैसे करुं ।।

कहके दिवाना, तेरा कन्हैया, "हर्ष" पुकारे मुझको सभी,
चाहे ये बदले, मुझसे जमाना, तु ना बदलना श्याम कभी,
तेरी चाहत का तू ही बता, मैं बयां जग में कैसे करुं ।।

(तर्ज : यूं तो हमने लाख हंसी...)

यूं तो हमने देव हजारों देखे, तुमसा नहीं देखा,
दुनियां में दातार हजारों देखे, तुमसा नहीं देखा ।। टेर ।।

तेरी ये अदा सबसे जुदा, जी करता देखुं सदा,
आँखो मेंऽऽऽ है बिजलियां, चेहरे पेऽऽऽ है शोखियाँ,
जाने कैसा मुझपे ये जादू सा चला ।। १ ।।

लगता नहीं अब ये जिया, रोग मुझे कैसा दिया,
होठों पेऽऽऽ तेरा नाम है, दिल में तूऽऽऽ मेरे श्याम है,
होले-होले दिल मेरा तेरा हो गया ।। २ ।।

कैसे कहुँ दिल की लगी, "हर्ष" हुई क्या दिल्लगी,
तेरा मैंऽऽऽ अब हो गया, तुझमें हीऽऽऽ मैं खो गया,
वश में नहीं मेरे मेरा ये जिया ।। ३ ।।

(तर्ज : जिसको तेरा भरोसा...)

ये चोंच इसने दी है, चुग्गा भी ये ही देगा,
कर श्याम पे भरोसा, हाथों को थाम लेगा ।। टेर ।।

उठते हैं भूखे सारे, भूखे कभी ना सोते,
कैसी फिकर है प्यारे, इस सांवरे के होते,
तेरी रोटियों की चिन्ता, मेरा सांवरा करेगा ।।

धन्धे में होते आये, हरदम ही लाभ हानि,
लेकिन हमेशा चलता, हम सबका दाना पानी,
झोली में आज काँटे, कल फूल भी खिलेगा ।।

घर में सयानी बेटी, इसकी फिकर बड़ी है,
थामे खड़ा कन्हैया, जादु की इक छड़ी है,
तेरी बेटियों का रिश्ता, पक्का यही करेगा ।।

किलकारी के बिना जो, सूना है तेरा आंगन,
सच्ची लगन लगाले, भर देगा तेरा दामन,
तेरी कामना को पूरा, दातार ही करेगा ।।

दिन है तो रात भी है, पर भोर फिर उगेगी,
मझधार से किनारे, तेरी नाव भी लगेगी,
ऐ "हर्ष" सारे करजे, चुकता यही करेगा ।।

(तर्ज : श्याम नाम की पगली...)

ये देव है निराला, मेरा श्याम खाटू वाला,
भूखा है ये नियम का इतना जान लीजिये,
जो भी किया हो वादा, उसपे ध्यान दीजिये ।। टेर ।।

इतना दयालू देव है खाटू का बाबा श्याम,
हर वक्त ये बनाता है दीनों के बिगड़े काम,
अच्छा बुरा ना देखे बस देखता है भाव,
हारे हुए के साथ है खाटू का मेरा राव,
कितने ही अधमी पापीयों को तार दिया है,
गणिका, अजामिल गिद्ध का उद्धार किया है,
हारे का साथ दूंगा दिया माँ को ये वचन,
कलयुग के देव को करूं, "झुक-झुक के मैं नमन"-३,
जो भी शरण में आये, उसको गले लगाये,
इक बार जाके सांवरे से मांग लीजिये ।।
जो भी किया हो वादा, उसपे... ।। १ ।।

सुनिये तुम्हें इक शख्श का किस्सा बताता हूँ,
कानों से मैंने जो सुनी तुमको सुनाता हूँ,
किस्मत के हाथों बेबस लाचार था बड़ा,
बेरोजगार था मगर काफी पढ़ा-लिखा,
काफी मशक्कत की मगर सूकून ना मिला,
जीवन में उसके चल रहा फाकों का सिलसिला,
जब भूख और बेहाली से वो चूर हो गया,
अपना ईमान बेचने "मजबूर हो गया"-३,
ये श्याम है अनोखा, भूखे को रोटी देता,
पापी का भी ये पेट भरे मान लीजिये,
जो भी किया हो वादा, उसपे... ।। २ ।।

कैसे हो दवा-दारू माँ बिमार थी बड़ी,
बरसों से उसके घर में थी बिछौने पे पड़ी,
सुबह-सवेरे भक्त ने इक फैसला किया,

श्री श्याम जी के कुण्ड में गोता लगा लिया,
मंदिर में जाके श्याम के चरणों में झुक गया,
बोला कन्हैया आज तेरा भक्त बिक गया,
चोरी करूंगा आज से मैं जेब काटूंगा,
लेकिन ये वादा है के "तुमसे हिस्सा बाटूंगा"-३,
पहली रकम जो पाऊँ, वो भेंट में चढ़ाऊँ,
अपनी दया का दीन को भी दान दीजिये ।।
जो भी किया हो वादा, उसपे... ।। ३ ।।

इस देव की दया से दुख के दिन गुजर गये,
बिगड़े हुए नसीबा भी पल में संवर गये,
बेकारी से जो कल तलक बेहाल हो गया,
मेरे श्याम की दया से वो खुशहाल हो गया,
उसने नियम से खूब ही वादे की लाज की,
पहली रकम जो पाई वो हुण्डी में डाल दी,

जिसने नियम दरबार में अपना निभाया है,
उस शख्श का खुद साथ देने, "श्याम आया है"-३,
जैसा नियम बनाओ, उसे प्रेम से निभाओ,
अपने दिलो में आज भगतों ठान लीजिये ।।
जो भी किया हो वादा, उसपे... ।। ४ ।।

इक रोज पहली जेब उसके हाथ से कटी,
बटुए की देख आँखे रह गई फटी-फटी,
मोटी रकम को देख के तबियत मचल गई,
नीयत बदल गई तभी किस्मत बदल गई,
सोचा के अगला हाथ जो मैं साफ करूँगा,
उसको चढ़ा नियम मेरा पूरा मैं करूँगा,
बटुए को फेंक के रकम अंटी में दब गई,
अपना विवेक खोया, "उसकी बुद्धि फिर गई"-३,
जब मन फिसल रहा हो, और रंग बदल रहा हो,

दिल में ईमानदारी का आह्वान कीजिये ।।
जो भी किया हो वादा, उसपे... ।। ५ ।।

नीयत सही रहेगी तो बरकत सही रहे,
बदनीयती से सिर तेरे आफत बनी रहे,
मन में जो खोट आया ना कुछ बोल पायेगा,
और वक्त पे विश्वास तेरा डोल जायेगा,
जैसे ही अगली जेब पे जब हाथ बढ़ाया,
आया पसीना माथे पे वो ना सम्भल पाया,
पकड़ो इसे ये चोर है इक शोर ये उठा,
अपने नियम को तोड़ के "वो था लुटा-लुटा"-३,
गर साफ है रवैया, तेरे साथ है कन्हैया,
वादे का "हर्ष" अपने सम्मान कीजिये ।।
जो भी किया हो वादा, उसपे... ।। ६ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : रसिक बलमा...)

रसिक छलिया SSS, दिल में समाया,
काहे दिल में समाया, मेरा चैन चुराया ।।

याद सताये तिहारी, तरसुं दरश की मारी,
रो-रो बुलाके हारी-२, तुझको ये राधा प्यारी ।।

विरहा सहा ना जाये, तुम बिन रहा ना जाये,
नैनों को कुछ ना भाये-२, आजा रे क्युं तरसाये ।।

व्याकुल है राधा तेरी, आके तु सुध ले मेरी,
"हर्ष" हुई क्युं देरी-२, बाट निहारूं तेरी ।।

(तर्ज : कोयलिया कजरी गाये...)

रतन सिंहासन सजके बैठा मंद मंद मुस्काये,
सांवरिया मन को भाये-२ ।। टेर ।।

गल फूलों का हार विराजे, मोर मुकुट मष्तक पर साजे,
घुंघर वाले बाल श्याम के, शोभा वरणी न जाये ।।

झालरदारी घेर घुमेरा, बड़ा गजब का बागा तेरा,
लखदातारी के हाथों में, मोरछड़ी लहराये ।।

कोई इत्तर छिड़क रहा है, श्याम धणी को निरख रहा है,
एक नजर जो देखे अपनी, सुध सारी बिसराये ।।

अनुपम ये सिगांर सुहाना, ''हर्ष'' देखके हुआ दिवाना,
कहीं श्याम को आज दिवानो, नजर नहीं लग जाये ।।

(तर्ज : आज बिरज में होली रे...)

रास रच्यो बड़ो भारी रे रसिया,
भारी रे रसिया बलिहारी रे रसिया ।। टेर ।।

शरद पुन्यु को चान्द उग्यो है,
थिरके राधा प्यारी रे रसिया ।।

शीश बोरलो नाक में बेसर,
गल बैजन्ति न्यारी रे रसिया ।।

कुंवर कन्हैयो रास रचावे,
गल बिच बैंया डारी रे रसिया ।।

चूम लई कान्हो माथे की बिन्दी,
मुल्की सखियाँ सारी रे रसिया ।।

उड़ गई चुनरी बिखर गयो कण्ठो,
मर गई लाज की मारी रे रसिया ।।

"हर्ष" जुगल जोड़ी आँगणे पधारी,
धन धन कुटिया म्हारी रे रसिया ।।

(तर्ज : तिनका तिनका जोड़)

रुपया पैसा चान्दी सोना धन बरसा दे रे,
कन्हैया टाटा और अम्बानी जैसा मुझे बनादे रे ।। टेर ।।

सभी को तू ही देता, सभी के दुख हर लेता,
दया मुझपे भी कर दे, बनादे मुझको नेता,
केबिनेट में पोर्टफोलियो मुझे दिला दे रे ।। १ ।।

मुझे तू डॉलर दे दे, मुझे तू पॉण्ड दे दे,
कहीं भी कैश करलुं, तू ऐसा बॉण्ड दे दे,
स्वीस बैंक में मेरा भी खाता खुलवा दे रे ।। २ ।।

बना क्रिकेटर ऐसा, सचिन तेन्दुलकर जैसा,
देश का नाम कर दूं, बनु गावास्कर जैसा,
धोनी जैसे छक्के तू मुझसे लगवा दे रे ।। ३।।

तेरा हो जाये इशारा, मेरा चमके सितारा,
चलुं तेरी राहों पे, बनुं हारे का सहारा,
"हर्ष" भगत की सेठ श्याम किस्मत चमका दे रे ।। ४ ।।

(तर्ज : नचणे नु अज मेरा जी करदा...)

सांवरे सलोने मेरा दिल करदा,
होली मेरे संग आज खेल सांवरे,
रंगने को तुझे मेरा दिल करदा-२,
आजा रंग दुं मैं तेरा अंग-अंग सांवरे ।।

उड़े है अबीर कहीं उड़े है गुलाल रे,
लाल लाल करदुं मैं सांवरे के गाल रे,
मलने को मुख मेरा दिल करदा-२,
तुझे देखके जमाना हो जा दंग सांवरे ।।

फगवा की रूत आई मन में उमंग है,
कहीं पे ठण्डाई कहीं घुट रही भंग है,
चखने को भंग मेरा दिल करदा-२,
आजा थोड़ी सी चढ़ाले तु भी भंग सांवरे ।।

भगतों की टोली आई सररर बोलती,
"हर्ष" बजाये देखो ढ़प और ढ़ोलकी,
नचने को संग तेरे दिल करदा-२,
तु भी ठुमका लगाले मेरे संग सांवरे ।।

(तर्ज : स्वर्ग से सुन्दर...)

लाड लडाऊँ तने मनाऊँ घणी करूं मनवार,
तु इकबर गोदी आजा, कान्हुड़ा मेरी गोदी आजा ।।

देख देख तन्ने माँ को, हिवड़ो यो हरसे,
गोदी खिलावण ताईं, मन मेरो तरसे,
मैं बण जाऊँ घोड़ो लाला तु बणजा असवार ।। १ ।।

मोर मुकुट सिरपे, आजा सजा द्युं,
छोटी सी वंशी तेरे, हाथां में थमाद्युं,
घणे चाव सुं तने पिराऊँ गल बैजन्ति हार ।। २ ।।

आगंण में डोलेगो जद, कुवंर कन्हैया,
रूणक झुणक तेरी, बाजेगी पैंजनिया,
रोम-रोम खिल जावे जद तु मुलके किलकी मार ।। ३ ।।

आजा रे कान्हा तन्ने, माखन खुवास्युं,
काजल को टीको तेरे, माथे पे लगास्युं,
"हर्ष" कहवे तु बेगो आजा लेवुं नजर उतार ।। ४ ।।

(तर्ज : लो आ गई उनकी याद...)

लो आ गया अब तो श्याम मैं शरण तेरी ।। टेर ।।

जाने कहां कहां पर, भटका तेरा दिवाना,
दर ये तुम्हारा बाबा, मेरा आखिरी ठिकाना,
जिसपे किया भरोसा, उसने ही आँख फेरी ।। १ ।।

मुझे थाम लो दुखों से, आया हूँ हार करके,
थक सा गया हूँ दाता, जग को पुकार करके,
इक आस दिल में मेरे, बाकी है श्याम तेरी ।। २ ।।

चरणों की धूल दे दे, मुझको भी हे दयालु,
भटका हूँ जिसकी खातिर, सच्ची खुशी वो पा लूं,
ऐ "हर्ष" तू बतादे, किस बात की है देरी ।। ३ ।।

(तर्ज : गली में आज चाँद निकला...)

श्याम आये तो ऐसा लगा आज,
कि घर मेरे चान्द निकला,
मानो पूनम की है ये रात, कि घर मेरे चान्द निकला ।।

साँवल मुखड़ा चंचल चितवन,
तुझपे न्योछावर मेरा तनमन,
आज वश में नहीं जज्बात, कि घर मेरे... ।। १ ।।

रूप का सागर छलका जाये,
चान्द भी देखे वो शरमाये,
करे आँखों ही आँखों में बात, कि घर मेरे... ।। २ ।।

आज चान्दनी बिखर गई है,
"हर्ष" की किस्मत निखर गई है,
मुझे कान्हा ने दी सौगात-२, कि घर मेरे... ।। ३ ।।

(तर्ज : इचक दाना...)

श्याम धणी के किर्तन में सब,
झूमो नाचो गाओ मौज मनाओ,
ठुमक ठुमक कर भगतों के संग,
नाचो और नचाओ मौज मनाओ ।। टेर ।।

भगतों के टोले किर्तन में आये,
बाबा के दिवानों को संग में वो लाये,
सारे मिलके एक ताल से तालियां बजाओ ।। मौज.. ।।

कोई सुनाने तो कोई सुनने आया,
कोई रिझाने तो कोई रमने आया,
गाने वालों के संग सारे तान से तान मिलाओ ।। मौज.. ।।

बाजे हैं जमके साज सुरीले,
नाचे हैं दर पे भक्त रंगीले,
नाचने वाले इन भगतों का हौसला बढ़ाओ ।। मौज.. ।।

ठुमका लगाके जो श्याम को रिझाये,
दुनिया भला उसे कैसे नचाये,
"हर्ष" कहे रे श्याम दिवानो बिल्कुल ना शरमाओ ।। मौज.. ।।

(तर्ज : तुझमे रब दिखता है...)

श्याम ही पूजा मेरी, श्याम ही प्रार्थना,
श्याम ही वंदन मेरा, श्याम आराधना,
मेरी आँखों में तू हैं, मेरी सांसों में तू है,
और कुछ ना बोलुं मैं बस इतना ही बोलुं,
दिल में तू बसता है बाबा मैं क्या करूं,
अपना तू लगता है बाबा मैं क्या करूं ।।
तेरे ही दम पे, तेरी ही दया से, सुखमय ये जीवन हो गया,
देखा है तुमको, जबसे सलोने, तेरी चितवन में मैं खो गया,
मेरी नस नस में तू है, मेरी धड़कन में तू है ।।
और कुछ ना... ।। १ ।।

कैसे मैं बताऊँ, कैसे मैं दिखाऊँ, प्यार दिल में है कितना भरा,
जुदा नहीं होना, खफा नहीं होना, आज वादा ये करले जरा,
मेरा साथी भी तू है, मेरा माझी भी तू है ।।
और कुछ ना... ।। २ ।।

मुरझा गया था, फूल ये मन का, तेरी किरपा से ही खिल गया,
तेरी शरण में, तेरे चरण में, "हर्ष" को तो ठिकाना मिल गया,
मेरे सपनों में तू है, मेरे अपनो में तू है ।।
और कुछ ना... ।। ३ ।।

(तर्ज : चांद आहें भरेगा...)

श्याम सरकार तुझको, आज किसने सजाया,
आसमां से फरिश्ता, जैसे धरती पे आया ।।

एक टक आज तुझको, देखता जा रहा हूँ,
तेरी चितवन में मैं तो, डूबता जा रहा हूँ,
प्यासी आँखों ने मेरी, आज सुख चैन पाया ।।

होंठ खामोश है पर, आँख कुछ बोलती है,
भाव भगतों के मन के, नजर से तोलती है,
तेरी गलियों में हमने, आज खुद को लुटाया ।।

प्रेम करने के तेरे, श्याम कितने तरीके,
प्रेम कहते हैं किसको, कोई तुमसे ये सीखे,
एक चातक ने मानो, आज चन्दा को पाया ।।

जादू तेरा सलोने, "हर्ष" पे चल गया है,
अब तलक ना मिला जो, आज वो मिल गया है,
तुझमे खोकर के मैंने, आज क्या कुछ ना पाया ।।

(तर्ज : केशरिया बालम...)

दोहा : आवण आवण कह गये कर गये कोल अनेक ।
गिणता गिणता घिस गई आंगलिया री रेख ।।

सांवरिया प्यारा आवो नी पधारो म्हारा श्याम जी,
बाटड़ली डीकां आवो नी पधारो म्हारा श्याम जी ।। टेर ।।

कालो कालो कागलो कूं-कूं करे मुण्डेर,
आवण में क्युँ श्याम जी कइयां करी थे देर जी ।।

सेवक बैठ्यो उणमणो किण विधि करूं उपाय,
इब तो देख्यौं आपने हिवड़ो यो हरसाय जी ।।

कान्हा-कान्हा मैं करुं पण कान्हो धरे न कान,
भगत पुकारे सांवरा इब तो धरो थे ध्यान जी ।।

पलक निहारे बारणो जद चर-चर करे किवाड़,
"हर्ष" न आयो सांवरो म्हारे मन में भई उचाट जी ।।

(तर्ज : चलते-चलते मेरे ये गीत..)

सुख में दुख में, बस इतना, याद रखना,
तुम जय श्री श्याम जपना-२,
सोते उठते, इक ये ही धुन, गुन-गुनाते रहना,
तुम जय श्री श्याम जपना-२ ।। टेर ।।

बीच राह में जो अगर, बिछड़ जाये तेरा हम सफर,
और कोई साथ न दे, साथ चलेगें प्रभुवर,
मेरे श्याम आयेगें, बस यूँ ही बुलाते रहना ।।
तुम जय श्री श्याम... ।। १ ।।

कितनी ही आँधियां चले, चले चाहे कितनी हवा,
पर तेरा जलता रहे, तूफानों में दिया,
ये ज्योति सदा, बस यूंही जलाते रहना ।।
तुम जय श्री श्याम... ।। २ ।।

श्याम की शरण में आ, बदल जाये तेरे दिन यहाँ,
"हर्ष" करेगा बन्दे, जीवन में तू मजा,
मेरे श्याम को प्यारे, बस यूंही सजाते रहना ।।
तुम जय श्री श्याम... ।। ३ ।।

(तर्ज : अपने तो अपने होते हैं)

सोचुं तो सपना लगता है, कान्हा अब अपना लगता है,
तेरा दरबार निराला रे, तेरा दरबार निराला,
मेरा सरकार निराला रे, मेरा सरकार निराला,
सबके दिलों में तू रहता है कान्हा छुपके जरूर कहीं,
अब लगता है मुझको जैसे कान्हा मुझसे दूर नहीं ।।

अब तक मैं सांवरे के चरणों से दूर था,
माया में लिपटा था मैं बड़ा मजबूर था,
तेरी तो प्रीत निराली रे, तेरी तो प्रीत निराली,
तेरी हर रीत निराली रे, तेरी हर रीत निराली ।। १ ।।

दीनों का सहारा है ये मैं तो यही मानता,
महिमा मेरे सांवरे की कौन नहीं जानता,
मेरा ये देव रंगीला रे, मेरा ये देव रंगीला,
मेरा ये श्याम हठीला रे, मेरा ये श्याम हठीला ।। २ ।।

सोचता हूँ "हर्ष" काहे देर से मैं आया हुँ,
अपने पराये का मैं भेद जान पाया हूँ,
तेरी अब महिमा गाऊँ रे, तेरी अब महिमा गाऊँ,
मैं तुझपे वारी जाऊँ रे, मैं तुझपे वारी जाऊँ ।। ३ ।।

(तर्ज : अपनी धुन में रहता हूँ...)

हाथों में ले इकतारा, गाता है ये बनजारा,
कान्हा कान्हा-२, कान्हा, कान्हा कान्हा ओ कान्हा ।।

मोहनी रूप बनाने वाला, जादु सा बिखराने वाला,
अन्तर्मन को छेड़ गया है, मेरा मोहन मुरली वाला,
श्याम सजन रसिया प्यारा, गाता है ये बनजारा ।। १ ।।

श्याम नाम का मैं दीवाना, श्याम शरण में एक ठिकाना,
सच्चा सुख पाना चाहो तो, एक बार तुम खाटू जाना,
साँचा मुक्ति का द्वारा, गाता है ये बनजारा ।। २ ।।

सांवलिये संग प्रीत लगाई, करली मैंने प्रेम सगाई,
बस्ती-बस्ती श्याम नाम की, भगतों मैंने अलख जगाई,
पागल प्रीत का हूँ मारा, गाता है ये बनजारा ।। ३ ।।

"हर्ष" सुनो ऐ दुनिया वालों, दिल में श्याम की ज्योत जगालो,
भव बन्धन सब कट जायेंगे, खुद को इनका दास बनालो,
झंझट मिट जाये सारा, गाता है ये बनजारा ।। ४ ।।

(तर्ज : रब ने बनाया तुझे...)

हो दूं मैं दिल से तुझको दुआयेंSSS,
क्या क्या किया ना तूने मेरे लिये श्याम मेरे लिये,
हाथ फिराके सारे दुखड़े हरेSSS,
झट दौड़ा आया बाबा, मेरे लिये श्याम मेरे लिये ।। टेर ।।

आस से ज्यादा मुझको श्याम मिला है,
तेरी ही दया से बाबा नाम मिला है-२,
सबको भुलाया मैंने तेरे लिये श्याम तेरे लिये ।। १ ।।

भूले को रस्ता तुमने श्याम दिखाया,
गले से मुझे भी तूने आन लगाया-२,
सब कुछ लुटाया मैंने तेरे लिये श्याम तेरे लिये ।। २ ।।

भूले से तू ना मुझसे श्याम खफा हो,
"हर्ष" भगत से चाहे जितनी खता हो-२,
सब छोड़ आया मैं तो तेरे लिये श्याम तेरे लिये ।। ३ ।।

(तर्ज : होले होले हो जायेगा प्यार...)

होले होले से तेरा मुस्काना, होले होले से तेरा तरसाना,
होले होले से तेरा इतराना होSSS, होले होले जादू करते हो,
होले होले काबू करते हो, होले होले से सितम ढाते हो, होSSS
क्या खूब सजे सरकार, दिल थाम तो लूं इकबार,
तुझे देख मेरे दिलदार आज गया दिल तुझको मैं हार,
सोणा-सोणा लागे मेरा श्याम छलिया, सोणा-सोणा लागे मेरा श्याम ।।

नैनों से श्याम सलोना, कर गया रे जादू टोना,
चाहें ना चाहें, तुझे पाके खोना,
चरणों में तेरे कान्हा, अब तो जीना और मरना,
बस और नहीं कुछ, हमको अब करना,
नैनों के निगोड़े, ना तीर चलाओ,
दिवाना हमको, ना आज बनाओ, ।। क्या खूब सजे.... ।।

दिल तुझमें डूबा जाये, बैठे हैं होश भुलाये,
तेरे "हर्ष" पे छाया, ये कैसा नशा है,
दिल को कैसे समझाऊँ, खुद को कैसे बतलाऊँ,
इस जाल में प्यारे, तू कैसा फँसा है,
मैं इसकी अदा पे, तो मिट ही चुका हूँ,
कुछ पाने चला था, पर लुट ही चुका हूँ।। क्या खूब सजे... ।।

(तर्ज : है अगर दुश्मन जामाना..)

है अगर सुन्दर राधा, कन्हैया कम नहीं कम नहीं,
जाने सारा जहाँ, हाँ अकेले हम नहीं हम नहीं ।।

राधिका सुन्दर अप्सरा, रूप का सागर सांवरा,
जिसने डाली है इक नजर, लुट गया आके वो इधर,
वो तो दिवाना हो गया, भाव में इनके खो गया,
गौर से देखो तो, मोहिनी मूरत को,
भूल ना पाओगे, सांवली सूरत को, आऽऽऽऽ,
मार डाले ना हमको तेरी अदा,
जब से देखा है हम हुए हैं फिदा,
बस गई आँखों में ये प्यारी छवि,
मन को भाई है ये निराली छटा,
तेरी गली में मोहन हम तो लुट चुके हैं,
सैंकड़ो मर चुके हैं हजारों मिट चुके हैं,
मार डाले ना हमको तेरी अदा,
जबसे देखा है हम हुए है फिदा, आऽऽऽऽ
जान जाये तो जाये, हमें अब गम नहीं-गम नहीं ।। १ ।।

देखलो मंजर अजब सा, ये नजारा है गजब सा,
ढ़ा रही झाँकी श्याम की, हम दिवानों पे सितम सा,
शान में इनकी क्या कहें, जान लो भगतों बिन कहे,
खो के रह जाओगे, श्याम की चितवन में,
बंधके रह जाओगे, प्रेम के बंधन में, आ SSS,
श्याम राधा का मैं दिवाना बना,
चरणों में मेरा तो ठिकाना बना,
मैं अकेला ही नहीं दुनिया में,
श्याम का पागल ये जमाना बना,
श्याम ठाकुर है मेरा, "हर्ष" ठकुरानी राधा,
सांवरे के बिन राधा, राधा बिन श्याम आधा,
श्याम राधा का मैं दिवाना बना, चरणों
में मेरा तो ठिकाना बना, आSSSS
देख कर इनको, बहारें थम गई-थम गई ।। २ ।।

ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे ।
खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे ।। ॐ जय।।
रतन जड़ित सिंहासन, सिर पर चंवर ढुरे ।
तन केशरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े ।। ॐ जय ।।
गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे ।
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जले ।। ॐ जय ।।
मोदक खीर चूरमा, सुवरण थाल भरे ।
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ।। ॐ जय ।।
झांझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धुरै ।
भक्त आरती गावे, जय-जय कार करे ।। ॐ जय ।।
जो ध्यावे फल पावे, सब दुख से उबरे ।
सेवक जन निज मुख से, श्री श्याम-श्याम उचरे ।। ॐजय ।।
श्री श्याम बिहारी जी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत 'आलूसिंह' स्वामी, मनवाछिंत फल पावे ।। ॐ जय ।।
जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे ।
निज भक्तों के तुमने, पूरण काम करे ।। ॐ जय ।।